कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः 11
अगस्त 2013

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

भारत और इंडिया का फर्क़ 06
-समाज प्रवाह

जय हो हिन्दुस्तान की 07
-हितेश कुमार शर्मा

कन्याओं की हत्याः गर्भ के भीतर और बाहर भी............09
-एस.के.तिवारी

कर्म व धर्म क्षेत्र-गीता की वाणीः कुरुक्षेत्र-देवदत्त शर्मा.......11

हमारी अस्मिता खतरे में क्यों?--पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली'........13

पारिवारिक खुशियों के लिए अनुभूत प्रयोग 14
-वैद्य पं. नारायण शर्मा

मेरी गंगोत्री यमुनोत्री यात्रा- -श्रीमती संपत देवी मुरारका....15

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग 04
अपनी बातः आखिर कब तक सोते रहोगे 05
हिन्दीत्तर भाषीः सुनील पारिट की कविताएं................. 20
कविताएंः
सुनीता शर्मा, डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, देवेन्द्र कुमार मिश्रा, राम आर्य व्यथित, राकेश दाधीच, सुरेन्द्र सिंह राजपूत, अजय चतुर्वेदी 'कक्का' 21–22
आध्यात्मः जीवन के उस पार -डॉ० अरुण कुमार आनंद 25
स्वास्थ्य 27
कहानीः पहचान-मोहन आनन्द तिवारी 29
साहित्य समाचार- 12,18,19, 23, 24, 26, 28
लघु कथाएँः रोहित यादव, गणेश प्रसाद महतो, शबनम शर्मा 18, 33
समीक्षा 34

गुस्सा अपनों ही से हुआ जाता है. जिनसे कोई लगाव या सहानुभूति नहीं, उनके विषय में हमें चिन्ता क्या? वह पथ-भ्रष्ट हो रहा है, वह अन्यायोचित कार्य कर रहा है, उसके प्रति हम एक सहज अनुभूति ही रखते हैं, परन्तु अपने प्रिय को ऐसा होता देख हममें सुधार की भावना उठती है, हम सुधार करना चाहते हैं और यदि उसने हमारी बातों पर ध्यान न दिया, तब क्रोध आता है, किन्तु क्रोध का निवारण करके सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करना श्रेयष्कर है.

कहने और करने में बहुत अन्तर है. वाणी से भावावेश में कुछ बक जाय यह बात दूसरी है; परन्तु उसकी चरितार्थता तभी है जब वह अपने जीवन में उसे पूर्ण करके दिखावे. हम उसी की बात मानते हैं जिसकी बातों में कर्म का पुट होता है.

जलती हुई चिता में लेटी काया के अवसान के निकट मानव को देखकर दृष्टा को सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है. वह अवाक रहकर जीवन की अन्तिम दशा को देख संसार से विराग की भावना से पूर्ण हो जाता है और अपने किए गए कार्यो की आन्तरिक समीक्षा करता है. ममता, माया व असत्य को छोड़ जीवन में सुधार की भावना से युक्त हो जाता है. इतना होने पर इस दृश्य के ओझल होते ही न मालुम हमारा वह ज्ञान कहां तिरोहित हो जाता है. जब हम ऐसे ससारिक माया मोह में पुनः आ जाते हैं, उससे जीवन का सुधार नहीं हो सकता.

जीवन का अवशेष शीघ्र अवश्यसम्भावी है फिर क्यों इतनी अनैतिकताएं, पाशविकाताएं तथा हत्याए? फिर क्यों इतना संघर्ष, लूट एवम् अनर्थ? कब तक के लिए.

सुख-दुःख का चक्र अनवरत चलता रहता है. भीषण ग्रीष्म के थपेड़ो से दग्ध वसुन्धरा भी मेघों की मूसलाधार वर्षा से शीतल होती है. वैसे ही दुःख के बाद सुख का आना क्रम होता हैं.

परिश्रम शरीर को सुगठित स्फूर्तिवान बनाता है. परिश्रम से शरीर के स्नायु क्रियाशील रहते हैं और क्रियाशील रहना दीर्घायु प्रदान करता है. परिश्रमी के पास आलस्य नहीं फटकता.

परिश्रमी सदा प्रसन्न रहता है, उसको स्वाभाविक आनन्द प्राप्त होता है, प्रत्येक परिस्थिति का सामना धैर्य पूर्वक करता है और प्रगाढ़ निद्रा में सोता है. चिन्ता क्लेश उसके पास नहीं फटकते.

-दाउजी

आदाब अर्ज़ है

एक परिवार को फोन का बिल बहुत अधिक मिला. तो परिवार के मुखिया ने इस पर चर्चा के लिए घर के सब लोगों को बुलाया.

पिताः यह तो हद हो गई. इतना ज्यादा बिल! मैं तो घर का फोन यूज ही नहीं करता. सारी बातें आफिस के फोन से करता हूँ.

माँः मैं भी ज्यादातर आफिस का ही फोन यूज करती हूँ. सहेलियों के साथ इतनी सारी बातें घर के फोन से करूंगी तो कैसे चलेगा.

बेटाः माँ आपको तो पता ही है कि मैं सुबह सात बजे घर से आफिस के लिए निकल जाता हूँ. जो बात करनी होती है आफिस के फोन से करता हूँ.

बेटीः मेरी कम्पनी ने मेरी डेस्क पर ही फोन दिया हुआ है. मैं तो सारी काल्स उसी से करती हूँ. फिर ये घर के फोन का बिल इतना आया कैसे?

घर की नौकरानी चुपचाप खड़ी सुन रही थी. सबकी प्रश्न भरी निगाहें नौकरानी की ओर उठीं...

नौकरानी बोलीः 'तो और क्या.. आप सब भी तो अपने काम करने की जगह का फोन इस्तेमाल करते हैं.. मैंने भी वही किया तो क्या?'

-ललित कुमार, नई दिल्ली

अपनी बात

आखिर कब तक सोते रहोगे...?

हम भारतीय सोने व कोसने के आदी हो चुके हैं. पहले भी सो रहे थे जब मुगलों और अंग्रेजों ने हम पर शासन किया. तब जाकर हमारी कुम्भ कर्णी निद्रा खुली. हम जागे और महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद आदि के देशभक्तों ने हमें जगाया, नेतृत्व प्रदान किया तो हमें आजादी मिली. आजादी मिलते ही जश्न मनाकर हम फिर सो गये. हमारे इस सोने की ही नतीजा है कि हमारे देश में भ्रष्टाचार, अपराध, बलात्कार जैसे कुकृत्य घटित हो रहे हैं. गुलामी की बेड़ियों में लम्बे अंतराल तक जकड़े होने के कारण हम बंद कमरे में, चाय की दुकानों, पार्को में दोस्तों के बीच अपने मोहल्ले से लेकर देश तक की तमाम सस्याओं के लिए कभी अपने पार्षद/ग्राम प्रधान से लेकर राज्य व केन्द्रीय सरकारों को कोसकर अपने अंदर की भड़ास निकाल लेते हैं. दोस्तों के बीच अपनी भड़ास निकालकर हम अपने आपको सामाजिक व्यक्ति कहलाने में गौरवान्वित महसूस करते हैं. अरे भाई कब तक भड़ास निकालते रहोगे. आखिर कब तक कोसते व सोते रहोगे. हमारे सेवानिवृत्त बुजुर्गो के पास केवल सोना और कोसना ही कार्य बचा है. जब मौका मिला दो वृद्ध जन एकत्र हुए और कोसना चालू कर दिया. हर समस्या के लिए सरकार जिम्मेदार है. अरे क्या प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री आपके गांव व मुहल्ले में पूर्व राजाओं की भांति भेष बदलकर निरीक्षण करने निकलेगें? आज के शासक चाहे तो भी संभव नहीं है. क्योंकि उनके पास समय था आज मोबाइल, ई-मेल, समाचार पत्र व इलेक्ट्रानिक चैनल है. जब घर का अगुआ सो रहा है तो नयी पीढ़ी तो सोयेगी हीं. आज की युवा पीढ़ी तो वैसे ही दिशाहीन है क्योंकि उन्हें मार्गदर्शित करने वाले दादाओं, बाबाओं व नानाओं एकल परिवार के कारण कमी है.

हमें चाहिए कि देश व राज्य की समस्याओं को छोड़कर अपने मोहल्ले व गांव की समस्याओं की ओर ध्यान दें. मोहल्ले की सड़के, नालियां, बिजली, पानी, शिक्षा व अपराध के लिए लड़े. इसके लिए आपको बंदूक, लाठी -डंडे व किसी व्यक्ति/पार्टी से दुश्मनी लेने की भी जरुरत नहीं है. आप अपनी स्थानीय समस्याओं को लिखकर स्थानीय प्रशासन दें या कहें, न सुनवाई हो तो नीचे से ऊपर तक स्थानीय सांसद/विधायक से लेकर मुख्यमंत्री, समाचार पत्रों व चैनलों को दें वे समाचारों के लिए तैयार बैठे हैं. कैसे काम नहीं होगा. इसके लिए आसमान से कोई देवदूत नहीं आयेगा.

वैसे तो मैंने कई समस्याओं को लेकर लड़ा है. लेकिन तत्कालीक एक घटना का जिक्र करना उचित समझता हूं. वर्ष २००६ में मैंने एक साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिलाधिकारी, इलाहाबाद के माध्यम से पंजीयक, समाचार पत्रों के पंजीयक को आवेदन किया. कागजी कार्यवाही पूरी कर जिलाधिकारी कार्यालय से अक्टूबर ०६ में एक कापी मुझे मिली और बताया गया कि पंजीयक को चली गई. दो माह तक कोई उत्तर नहीं मिलने पर जिलाधिकारी कार्यालय से संपर्क किया तो प्रेषण पंजिका में विवरण विवरण दिखाया गया. मैंने पंजीयक कार्यालय को पंजीकृत पत्र भेजा. कोई जवाब नहीं मिला. तीन पत्र लिखें कोई जवाब नहीं. कुछ लोगों ने कहा जाइए दिल्ली ओर कुछ पैसा देकर करा लिजिए वैसे नहीं आएगा. मैंने आदतन एक भी पैसा न देने को मजबूर था. फिर कुछ व्यस्तता बढ़ी इस तरह से २०११ भी निकल गया. २०१२ के प्रारम्भ में मैंने पंजीयक कार्यालय से जन सूचना मांगी. जिसका उत्तर मुझे करीब दो माह बाद मिला 'इस नाम व पत्रांक से कोई पत्र इस कार्यालय को प्राप्त नहीं हआ है.' और नीचे अपील अधिकारी का नाम व पता दिया था. मैंने अपील अधिकारी को जिलाधिकारी कार्यालय से प्राप्त पत्र के साथ भेजा. वहां से शीर्षक आवंटन का पत्र प्राप्त हुआ.

उपरोक्त लिखने का आसय यह है कि उठो जागो और अपनी समस्याओं के लिए संघर्ष करो, समस्या कैसे नहीं दूर होगी. यही निकम्मे, भ्रष्ट अधिकारी व नेता आपकी समस्याओं का निवारण करेगें. उठो! जागो! और संघर्ष करों.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मुद्दा

'भारत' और 'इंडिया' का फर्क

भारत में २६ रुपये से ज्यादा रोजाना खर्च करने वाले अमीर है. ६२ फीसदी भारतीय कृषि से जुड़े हैं, लेकिन सरकार को उन दो प्रतिशत इंडियन्स की चिंता ज्यादा है जिनकी पूंजी से सेंसेक्स ऊपर-नीचे होता है. इंडिया वह है जिसमें धन कुबेरों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है. वर्तमान में 'इंडिया' के धनकुबेरों के पास १२०० अरब डॉलर की संपत्ति है जो लगभग भारत के सकल घरेलू उत्पादक के बराबर है.

-समाज प्रवाह, मुंबई

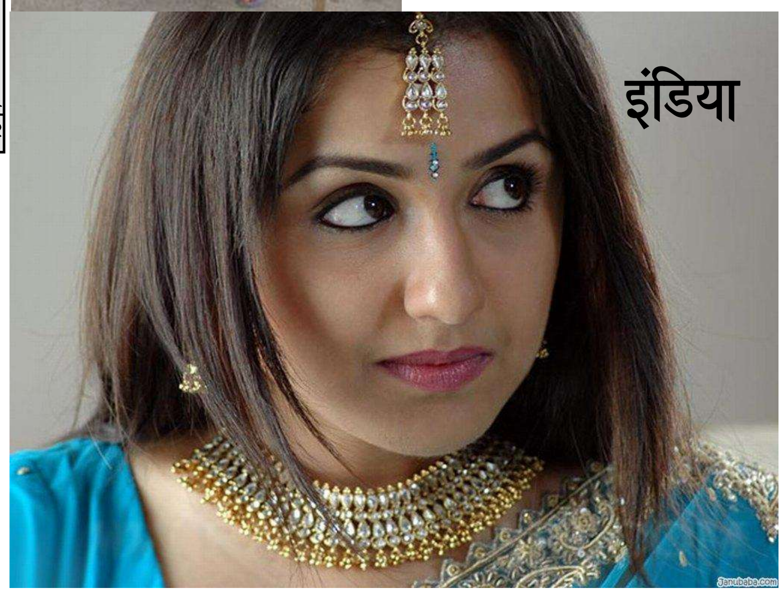

लगभग १२३करोड़ अभावग्रस्त आबादी वाला एक भारत हैं. इसी में ८१००० संपन्न लोगों का इंडिया भी है. दोनों के बीच अद्भुत शांतिपूर्ण सहअस्तित्व है. दोनों फल-फूल रहे हैं यानि अभिजात्यवर्ग और गरीब की गरीबी बढ़ रही है. अर्थशास्त्रीय पैमाना इस बात की तस्दीक करता है. भारत में २६ रुपये से ज्यादा रोजाना खर्च करने वाला अमीर है, वहीं इंडिया में २५ करोड़ से ज्यादा की संपत्तिवाले लोग आते हैं. गिरती हुई अर्थव्यवस्था के बीच देश में धनकुबेरों की संख्या बढ़ती जा रही है. एफडीआइ के जरिये प्रवेश पाने के लिए वॉलमार्ट सरीखी तमाम कंपनिया बेताब नजर आ रही है. ६२ फीसदी भारतीय कृषि से जुड़े हैं, लेकिन सरकार को उन दो प्रतिशत इंडियन्स की चिंता ज्यादा है जिनकी पूंजी से सेंसेक्स ऊपर-नीचे होता रहता है. इंडिया वह है जिसमें धनकुबेरों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, इंडिया वह है जहां पिछले साल के मुकाबले २५ करोड़ से ज्यादा की संपत्ति वाले अमीर परिवारों की संख्या में ३० फीसदी का इजाफा हो गया है. एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में २५ करोड़ से ज्यादा नेटवर्थ वाले परिवारों की संख्या ६२००० से बढ़कर ८१००० हो गई और वर्ष २०१६-१७ तक भारत के अल्ट्रा एनएच का कुल नेटवर्थ पांच गुना बढ्ढ्कर ३१८ लाख करोड़ रुपये के स्तर पहुंच जाने का अनुमान है. वर्तमान में 'इंडिया' के धनकुबेरों के पास १२०० अरब डॉलर की संपत्ति है जो लगभग भारत के सकल घरेलू उत्पादक के बराबर है. इंडिया के लोग कपड़े, जेवर, बेशकीमती घड़ियों, लग्जरी कारों, इलेक्ट्रानिक गैजेट्स, हॉलिडे पैकेज और होम डेकोरेशन जैसी चीजों पर सबसे ज्यादा खर्च करते हैं. इन्हीं इंडियन्स के लिए भारत में शुरू हुआ है एक नया बिजनेस जिसका नाम है लग्जरी कॉनसीएर्श. एक अंतर्राष्ट्रीय कंपनी ने भारत के इंडियन्स के लिए बिजनेस लॉंच किया है. यह बताना जरूरी है कि यह कंपनी केवल इंडियन्स

शेष पृष्ठ १०.....पर

मुद्दा

जय हो हिन्दुस्तान की

> चुनाव आ रहे हैं, प्रत्येक पार्टी ने चुनाव से पहले ही अपना-अपना प्रधानमंत्री सुनिश्चित कर लिया है. योग्यता का कोई प्रश्न नहीं उठता. प्रधानमंत्री पद मुट्ठी में रहता है. यह नाटक भारत में ही सम्भव है, जहां योग्यता नहीं बाहुबल चलता है.
>
> थके हुए नेतृत्व को युवा नेतृत्व की आवश्यकता पड़ जाती है. भले ही यौवन राजनीति से वाकिफ हो अथवा ना हो. वैसे तो राजनीति भी एक उद्योग हो चुकी है. वेतन के अतिरिक्त करोड़ों रुपये सांसद निधि के रूप में प्राप्त होते हैं. उनसे कितना विकास कार्य होता है इसका कोई ब्योरा उपलब्ध नहीं होता, ऐसी कोई जांच नहीं होती, जिससे मापा जा सके कि जो सांसद निधि या विधायक निधि दी गई थी, उससे वांछित विकास कार्य हुआ अथवा नहीं.
>
> **-हितेश कुमार शर्मा**, बिजनौर, उ.प्र.

जो विश्व में कहीं नहीं होता. जो प्रजातंत्र में कहीं नहीं होना चाहिए. वह भारतवर्ष में पूर्व निश्चित होता है. चुनाव आ रहे हैं, प्रत्येक पार्टी ने चुनाव से पहले ही अपना-अपना प्रधानमंत्री सुनिश्चित कर लिया है. भाजपा के भावी प्रधानमंत्री रथ पर सवार हैं. कांग्रेस अपने युवराज में प्रधानंत्री को देख रही है. बसपा में तो संशय की बात ही नहीं है और इसी प्रकार सपा भी प्रधानमंत्री के प्रश्न सुनिश्चित है. रालोद भी कभी-कभी सपने देखती है. क्या मजाक है कि जनता को अथवा जनप्रतिनिधियों को अपना प्रधानमंत्री चुनने का अवसर नहीं है, बल्कि पार्टी पहले ही तय कर लेती है और कहीं-कहीं तो बहुमत वाली पार्टी का मुखिया स्वयंभू प्रधानमंत्री पद के लिए अपना नाम घोषित कर देता है. हो सकता है भाजपा अथवा कांग्रेस में प्रधानमंत्री के पद पर कोई परिवर्तन हो, किन्तु सपा, बसपा या रालोद में परिवर्तन नहीं हो सकता. योग्यता का कोई प्रश्न भारतवर्ष के चुनाव में नहीं उठता है और न ही न्यूनतम योग्यता सांसद या विधायक की सुनिश्चित है. देशभक्ति का भी कोई मापदण्ड नहीं है. कोई व्यक्ति कितना देशभक्त है, देश के लिए उसने क्या किया है. यह नहीं देखा जाता. केवल बाहुबल, केवल बहुमत के आधार पर प्रधानमंत्री पद के योग्य समझती है वहां कठपुतली प्रधानमंत्री होता है, निर्णय सभी हाईकमान के लागू होते है. देश के विकास में कोई योगदान हो या न हो, पार्टी को बहुमत मिलना चाहिए. देशभक्ति का कोई प्रतिशत हो या न हो केवल हाईकमान तथा पार्टी के प्रति निष्ठा होनी चाहिए अथवा पार्टी का मुखिया बसपा या सपा जैसा होना चाहिए. प्रधानमंत्री पद मुट्ठी में रहता है. जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में कोई भाग नहीं लिया, जिनके परिवार ने स्वतंत्रता संग्राम में कोई योगदान नहीं दिया, उनको भी यह अवसर मिल सकता है, बस होना यह चाहिए कि उनकी पार्टी बहुमत में आये अथवा सरकार बनाने की स्थिति में हो या उसकी पार्टी के सहयोग के बिना सरकार न बन सकती हो. पहले भी एक-दो बार बहुमत न होते हुए भी केवल प्रसन्नता के आधार पर, केवल कृपा के आधार पर किसी एक व्यक्ति को प्रधानमंत्री बना दिया गया है और यदि उसने नियोक्ता की इच्छानुसार कार्य नहीं किया तो समर्थन वापस ले लिया गया है. यह नाटक भारतवर्ष में ही सम्भव है, जहां योग्यता नहीं बाहुबल चलता है, बहुमत चलता है.

समय बदल रहा है और अधिकांश पार्टियों के मुखिया थके-थके से प्रतीत हो रहे हैं. अतः अपने-अपने युवराज आगे बढ़ाये जा रहे है. ऐसे युवराज जो अभी राजनीति को गहनता से नहीं समझ सके हैं, उनको माननीय कहकर सम्बोधित किया जा रहा है और उनके वक्तव्य प्रकाशित किये जा रहे हैं, किसी-किसी युवराज का तो ऐसा फोटो देखने को मिलता है, जिसके राजनीति में बालिंग होने पर भी संशय होने लगता है. कांग्रेस के युवराज पिछले काफी समय से देश का दौरा कर रहे हैं. दलितों के घर भोजन कर रहे और निवास कर रहे हैं. धन्य है कांग्रेस के युवराज, जो बिना थके, बिना रुके देश के दौरे पर निकले हुए हैं. उनका दौरा, उनकी भाग-दौड़ कितनी सार्थक है, कितनी देशहित में है और उससे कितना विकास हुआ है, कितना दलितों का उत्थान हुआ है, कितनी समस्याओं का समाधान हुआ है

और कितनी गरीबी दूर हुई है, कितने भ्रष्ट नेता पकड़े गये हैं, कितने लम्बित वादों का निस्तारण हुआ है, सांसद निधि का किस प्रकार उपयोग हुआ है. यह कोई ब्यौरा उपलब्ध नहीं है, केवल उपलब्ध है तो उनकी यात्राओं का विवरण. उनका जन अदालत लगाकर समस्याओं को सुनना. जनता में अपनी पहचान बनाना, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं. यही स्थिति सपा के युवराज की है. वक्तव्य सम्भवतः उनकी ओर से बड़ी विद्वतापूर्ण ढंग से लिखवाकर दिया जाता है. सपा के मुखिया के साथ उनकी भी बचपन की फोटो प्रकाशित होती है. पोस्टरों में चित्रित होती है. किन्तु उन्होंने अभी तक देशहित का कार्य किया हो, किसी गरीब की सहायता की हो, किसी समस्या का समाधान किया हो या कोई ठोस बात ऐसी कही हो, जो जनहित में हो. ऐसा कुछ नजर नहीं आता. भले ही उनके नाम के पहले माननीय लिखना शुरू कर दिया गया है, क्योंकि प्रत्येक पार्टी में चाटुकारों का एक विशेष महत्व होता है और प्रत्येक चाटुकार अवसर को भुनाने के लिए बेचैन रहता है. रालोद के युवराज भी भाग-दौड़ कर रहे हैं. जनता के बीच जा रहे हैं. भाषण हो रहे हैं. लेकिन क्या किसी गरीब के राशन की चिन्ता उन्होंने की है. क्या किसी गरीब की मुकदमें की पैरवी उन्होंने की है. क्या किसी देशहित या जनहित का कार्य उनके द्वारा सम्पन्न हुआ है, ऐसा प्रतीत नहीं होता. केवल पूज्य पिताश्री पुत्र को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं, क्योंकि वह देख चुके हैं कि उनके किये अब कुछ नहीं हो रहा. अतः जिस प्रकार थके-थके पांव को नई बैसाखियों की आवश्यकता पड़ती है. उसी प्रकार थके हुए नेतृत्व को युवा नेतृत्व की आवश्यकता पड़ जाती है. भले ही यौवन राजनीति से वाकिफ हो अथवा ना हो. इस संबंध में प्रशंसा करूंगा श्री पासवान और श्री देशमुख की, जिन्होंने अपने-अपने पुत्र को फिल्म इंडस्ट्री की ओर बढ़ाया और फिल्म उद्योग में उनका उत्साहवर्द्धन किया. वैसे तो राजनीति भी एक उद्योग हो चुकी है. वेतन के अतिरिक्त करोड़ों रुपये सांसद निधि के रूप में प्राप्त होते हैं. उनसे कितना विकास कार्य होता है इसका कोई ब्योरा उपलब्ध नहीं होता, ऐसी कोई जांच नहीं होती, जिससे मापा जा सके कि जो सांसद या विधायक निधि दी गई थी, उससे वांछित विकास कार्य हुआ अथवा नहीं. राजनीति में अरबों और करोड़ो के घोटाले की सम्भावना हर समय बनी रहती है और यह सब कुछ बिना परिश्रम प्राप्त हो जाता है जबकि अन्य व्यवसाय में बहुत परिश्रम करना पड़ता है. साधुवाद है उन सभी राजनीतिज्ञों को जिन्होंने अपना जीवन ईमानदारी से व्यतीत किया और अपने परिवार को राजनीति से दूर रखा.

चुनाव आ रहे हैं, प्रत्येक पार्टी टिकट दे रही है, अपने-अपने समर्थक खड़ी कर रही है. टिकट देने की जो प्रक्रिया सुनायी पड़ती है, उसमें पार्टी अपनी तरफ से न तो किसी को टिकट देती है और न ही चुनाव लड़ने का खर्चा देती है. बल्कि व्यक्ति स्वयं पार्टी के पास जाता है, पार्टी कोष में टिकट के महत्व के अनुसार धनराशि चन्दे के रूप में देता है और वांछित टिकट प्राप्त करता है. प्रजा का कोई लेना-देना नहीं होता. प्रजा किसी को खड़ा नहीं करती. सब स्वतः स्वयंभू आधार पर चलता है. जिस व्यक्ति के पास पार्टी कोष में देने के लिए धन उपलब्ध होता है वह जाकर टिकट ले लेता है. यह बात विशेष महत्व की नहीं है कि जनता उसे पसन्द करती है अथवा नहीं. उस व्यक्ति की पृष्ठभूमि देशभक्ति की है अथवा नहीं. उस व्यक्ति की योग्यता संसद अथवा विधानसभा के लायक है अथवा नहीं. केवल मात्र एक योग्यता आवश्यक है कि वह पार्टी कोष में कितना चन्दा दे सकता है. व्यक्ति का आचरण, चरित्र कोई अर्थ नहीं रखता. हां टिकट देते समय एक बात का ध्यान अवश्य रखा जाता है कि व्यक्ति जीतने वाला हो, जिससे पार्टी मुखिया मुख्यमंत्री अथवा प्रधानमंत्री बन सके. जनता की पसन्द ना पसन्द कोई मायने नहीं रखती. आज आवश्यक है कि इस सन्दर्भ में जनता में जाग्रति आये तथा जनता निर्दलीय रूप में ही सही अपना निज का प्रतिनिधि खड़ा करे. किसी पार्टी विशेष का थोपा हुआ व्यक्ति स्वीकार न करें. जनता पार्टी के मोह में न फंसे क्योंकि ऊपर से लेकर नीचे तक प्रत्येक पार्टी में ऐसा व्यक्ति ढूंढना सम्भव नहीं है, जो घोटाले से परहेज करता हो. हर पार्टी में कोई न कोई घोटालेबाज उपलब्ध है. यह आवश्यक नहीं है कि सब घोटालेबाज हों लेकिन बाहर से थोपे हुए व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं होती. अतः आवश्यक है कि जनता अपना प्रतिनिधि चुनाव में खड़ा करे और उसी को जिताये. पार्टी विशेष के समर्थन में वोट न दे. जिस व्यक्ति का चयन किया जा रहा है, जनता उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, उसका आचरण, उसका चरित्र सब कुछ जांच-परख कर वोट दे. भले ही त्रिशंकु सरकार

शेष पृष्ठ १४ पर....

कन्याओं की हत्याः गर्भ के भीतर और बाहर भी

जिस देश में नवरात्रि के दिन बच्चियों को देवी स्वरुप मानकर उनकी पूजा की जाती है उसी देश में कन्या भ्रूण हत्याएँ भी की जाती हैं. हमारे देश में एक करोड़ 45 लाख बच्चियाँ जन्म लेती हैं जिनमें से 55 लाख अपना 15वाँ जन्म दिन तक नहीं मना पातीं। आज कानूनी प्रतिबंध के बावजूद मादाभ्रूणों की हत्या की संख्या 12 लाख पहुँच गई है।

✍एस.के. तिवारी, इलाहाबाद

"यत्र नारी पूजयंते, रमते तत्र देवता" जैसे महान आदर्श वाले भारत देश में यह कैसी विडम्बना है कि आज वहाँ नारी का जन्म ही अशुभ माना जाने लगा है. नवरात्रि के दिन बच्चियों को देवी स्वरुप मानकर उनकी पूजा की जाती है, परंतु ठीक इसके विपरीत कन्या भ्रूण हत्याएँ भी यहाँ की जाती हैं. हम सेटेलाइट युग में जी रहें हैं परन्तु कन्याओं के बारे में परंपरागत धारणाएँ अंगद के पैरों की तरह अब भी वहीं जमी हुई हैं.

हर वर्ष हमारे देश में एक करोड़ 45 लाख बच्चियाँ जन्म लेती हैं जिनमें से 55 लाख अपना 15वाँ जन्म दिन तक नहीं मना पातीं. 1976—77 में कन्या भ्रूण के कारण होने वाले गर्भ पातों की संख्या 2,78,370 थी जो एक दशक बाद वर्ष 1986—87 में 5,84,210 हो गई और आज कानूनी प्रतिबंध के बावजूद मादाभ्रूणों की हत्या की संख्या 12 लाख पहुँच गई है. हालाँकि देश में भ्रूण हत्या के खिलाफ कानून भी बनाया गया है. एम०टी०पी० एक्ट 1971 के अनुसार 20 हफ्ते के बाद गर्भपात जुर्म है. परंतु लिंग का निर्धारण तो 13 हफ्ते पर ही मुमकिन हो जाता है.

महराष्ट्र सरकार ने पहली बार मई 1988 में महाराष्ट्र रेगुलेशन आफॅ प्रीनेटल डायग्नोस्टिक एक्ट लाई. इस कानून के बाद अल्ट्रसाउंड आदि तरीकों से लिंग निर्धारण पर रोक लगा दी गई और जुर्म साबित होने पर तीन वर्ष की सजा मुकर्रर की गई. इसी तर्ज पर भारत सरकार

ने भी 'प्रीनेटल डायग्नोस्टिक टेक्नीक रेगुलेशन' तथा 'प्रिवेशंन ऑफ मिस यूज़ एक्ट 1994' बनाया. इसमें भी तीन साल कैद और 10,000 तक जुर्माना हो सकता है. परन्तु दुख की बात यह है कि ऐसे कानून अपराधिक 'हाथियों' के कानों में जूं रेंगने के समान है. यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार एशिया में गर्भावस्था में बाल शिशुओं की अपेक्षा मादा शिशुओं का जीवन विश्व के मानदंडो के अनुसार बहुत ही कम है. परिवार कल्याण निदेशालय द्वारा प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम 1994 के लागू होने के बाद भी देश भर के कस्बों, शहरों और महानगरों के निजी क्लीनिकों में गर्भावस्था के प्रारंभिक दिनों में भ्रूण परिक्षण हो रहे हैं और गर्भवती स्त्रियों, उनके परिजनों और डाक्टरों की मिलीभगत से मादा भ्रूणों की हत्याएँ की जा रही हैं.

अल्ट्रसाउंड जांच के बाद गर्भस्थ मादा भ्रूण की या तो हत्या कर दी जाती है या फिर गर्भवती स्त्रियों की देखभाल में भेदभाव बरता जाता है. इस तरह भ्रूण हत्या या गर्भपात का शिकार होने से मादा शिशु बच जाती हैं, वे कमजोर और कम वजन की पैदा होती हैं तथा उनके कुपोषित होने का खतरा बना रहता है. लिंग निर्धारण का काम डाक्टरों की मदद से होता है और जिस तरह चंद सिक्कों को लिए कुछ डाक्टर लिंग निर्धारण करते हैं उसी तरह कुछ स्त्री रोग विशेषज्ञ मादा भ्रूण हत्या का काम करते हैं. सौ वर्ष में यह फर्क पड़ा है कि पहले जिम्मेदारी अशिक्षित लोगों पर थीं पर अब असली खिलाड़ी शिक्षित लोग हैं. समाज के सभी वर्ग बेशर्मी से इस पाप कार्य में शामिल हैं. बहुत कम ऐसे प्रगतिशील लोग मिलेंगे जो खुशी से एक या दो कन्याओं के मां -बाप बनते हैं. कुछ तो पुत्र की चाहत में परिवार नियोजन को भूल ही गए हैं.

सरकार तथा विभिन्न संगठनों के प्रयासों के बावजूद कन्या भ्रूण तथा शिशु कन्याओं की हत्या का तांडव देश में अब

भी जारी है. इसका स्पष्ट कारण है भारतीय समाज में इस संबंध में सही चेतना का अभाव. 'बेटी पराया धन' जैसी धारणा तथा दहेज जैसी समस्याएँ आमतौर पर लोगों को भ्रूण हत्या तथा कन्या शिशुहत्या के लिए प्रेरित करती हैं. अंतरराष्ट्रीय संस्था यूनिसेफ के अनुसार भारत में मात्र चार राज्यों को छोड़कर हर राज्य से कन्या भ्रूण हत्या या नवजात शिशु हत्या के केस दर्ज हुए हैं. सिर्फ सिक्किम, नागालैंड, मेघालय और मिजोराम में ही अभी लोगों को इस बीमार मानसिकता ने नहीं जकड़ा है.

कल्याण मंत्रालय ने कन्याओं के हित में कई योजनाएँ चलाई हैं जिससे लोग प्रोत्साहित होकर उन्हें बोझ न समझे. साथ ही छोड़ी गई अनाथ बच्चियों के लिए सरकारी क्रेडल (अनाथालय) बनाए गए हैं. इन अनाथालयों से बड़ी हुई बच्चियों के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण की भी व्यवस्था है. ऐसी कई योजनाएँ इस समय देश भर में संचालित की जा रही हैं जिससे नारी उत्थान को गति मिल रही है. सिर्फ भ्रूण और शिशु हत्याओं को कानूनन सख्ती से रोकना ही इस गंभीर समस्या का समाधान नहीं है. परंतु यह तथ्य भी निर्विवाद है कि जन-जागरण एंव जन सहयोग के बिना महज संस्थागत कार्यक्रमों के निष्पादन से अपेक्षित परिणाम नहीं मिल सकते हैं.

उचित शिक्षा, दहेज प्रथा तथा लड़की के साथ भेदभाव और अवहेलना संबंधी कुमनोवृतियों को जड़ से उखाड़ने में ही इस समस्या का समाधान निहित है. जो कार्य इस सहस्राब्दि में नहीं हो पाया है वह सही जन-चेतना और कार्यक्रमों के उचित निष्पादन से अगले कुछ दशकों के भीतर हो पाना अवश्य संभव है.

शेष पृष्ठ ६....**'भारत' और 'इंडिया' का फर्क .....**

के लिए है, भारतीयों के लिए नहीं. दरअसल, यह कंपनी उन लोगों को अपना मेंबर बनाती है जिनके पास कम से कम दो करोड़ का घर हो. इस कंपनी में मेंबरशीप फीस ५० हजार से लेकर पाच लाख रूपये तक है. आइए आपको दिखाते है कंपनी इंडियन्स को किस तरह की सेवाएं दे रही है. दिल्ली के एक बिजनेसमैन ने अपने बच्चे के स्कूल प्रोजेक्ट के लिए डेड सी के बालू की मांग की थी, जिसे कंपनी ने भारी-भरकम राशि लेकर उपलब्ध करवाया. इसी तरह एक इंडियन कपल को इंडोनेशिया में पालकी से घूमने की ख्वाइश थी, उनकी इच्छा भी पूरी कर दी गई. आइए अब आपको दिखाते हैं गांधी, नेहरू जैसे तमाम युगदृष्टाओं के सपनों के भारत की तस्वीर. भारत में लगभग ३७ फीसदी लोग गरीब रेखा के नीचे जीवनयापन करते हैं. यह वही देश है जो भूख सूचकांक में ८१ देशों के बीच ६७वां स्थान रखता है. असमानता समायोजित मानव विकास सूचकांक में भी देश फीसदी है और १८७ देशों में इसका १३४ वां स्थान है. यही वही देश है जहां कुपोषण और स्वास्थ्य सुविध ा के अभाव में प्रति हजार ४७ बच्चों की मौत हो जाती है. इतना ही नहीं बैंक के बोझ तले दबे हुए लगभग ढाई लाख किसान पिछले १३ सालों में आत्महत्या कर चुके है. भ्रष्टाचार के मामले में भारत १८३ देशों में से ९५वें स्थान पर है. दिनों दिन अमीरी और गरीबी की खाई बढ़ती चली जा रही है और इस खाई के साथ ही बढ़ती चली जा रही है. इंडिया और भारत के बीच की दूरी. कहते हैं असल भारत के दर्शन करने हैं तो गांव में जाइए, लेकिन विडंबना देखिए देश की सरकार और उसके बजट को 'इंडिया' की चिंता तो बहुत रहती है पर उसकी सोच या बजट में 'भारत' कहीं नजर नहीं आता. 'इंडिया' को 'रेवेन्यू फॉरगॉन' के नाम पर साढ़े पांच लाख करोड़ रूपये की टैक्स छूट दी जाती है, लेकिन 'भारत' को जीवनयापन और बुनियादी सुविधाओं के लिए दी जाने वाली सब्सिडी के लायक भी नहीं समझा जा रहा है और सब्सिडी में कटौती का दौर लगातार जारी है. इन हालात में 'भारत' का आम आदमी परेशान है, 'इंडिया शाइनिंग' के नारे दिये जा रहे है और कल्याणकारी राज्य भारत में फिलहाल जनकल्याण योजनाओं का हाल खुले में सड़ रहे २.२ करोड़ टन अनाज की तरह हो गया है. आज नए वित्त मंत्री चिदम्बरम के लिए फिर से एक चुनौती है कि जनकल्याणकारी योजनाओं के लिए भूखे को अनाज देने के लिए अगर खाद्य सुरक्षा कानून बनाते है तो भारत तो खुशहाल होगा, लेकिन राजकोषिय घाटा बढ़ जाने से इंडिया को चमकाने वाले विदेशी निवेशकर्ता और एफ.डी.आई नाराज हो जायेंगे. इंडिया को लुभाने और मनोरंजन कराने की की अगर यही हालत रही तो वह दिन दूर नहीं जब मनोरंजन, पर्यटन की दिशा में एक नया कदम उठाते हुए इंडिया के लोगों को भारत भ्रमण कराया जाएगा और दूर से गरीब दिखाया जाएगा. उसका खाना, उसका घर, उसकी पत्नी, उसके बच्चे और उसकी झोपड़ी दिखाकर जीडीपी में सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ाया जाएगा.

कर्म व धर्म क्षेत्र-गीता की वाणी-कुरूक्षेत्र

हरियाणा का गौरवशाली इतिहास वैदिक काल से शुरू होता है. जहां द्वापर में कौरव-पांण्डवों का महाभारत युद्ध हुआ. यहां कई पर्यटन व धार्मिक स्थल भी बहुत हैं.

✍ देवदत्त शर्मा 'दाधीच'
जयपुर, राजस्थान

भारतवर्ष एक धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक राष्ट्र है. उसको सुव्यवस्थित चलाने के लिये कई राज्यों का गठन किया गया है. उसमें एक राज्य है-हरियाणा. इसका क्षेत्रफल लगभग ४५,००० वर्गमीटर है और जनसंख्या करीब ढाई करोड़ है तथा हिन्दी भाषी राज्य है. हरियाणा का गौरवशाली इतिहास वैदिक काल से शुरू होता है. जहां द्वापर में कौरव-पांण्डवों का महाभारत युद्ध हुआ और उसी जगह कलयुगी जीवों के कल्याण हेतु दोनों सेनाओं के बीच विशाद रहित अर्जुन का मोह भंग करके गीता का उपदेश दिया व भगवान कृष्ण अर्जुन के सारथी बने. उस क्षेत्र को कुरूक्षेत्र कहते हैं जो इसी हरियाणा राज्य में है. पंजाब राज्य के पुनर्गठन के समय १ नवम्बर १९६६ को अस्तित्व में आया. यहां पर कई प्रकार के उद्योग कृषि उपज व शिक्षा के केन्द्र हैं. पर्यटन व धार्मिक स्थल भी बहुत हैं. इसी राज्य में पंतजलि योग पीठ द्वारा एक गुरूकुल की स्थापना की है जो हरियाणा राज्य के किशनगढ़ घासेडा में स्थित है. यहां पर भारतीय संस्कृति व आधुनिक विज्ञान की शिक्षा दी जाती है जो अपने आपमें एक मिसाल है. इसी क्षेत्र में पावन तीर्थ कुरूक्षेत्र है, जिसका वर्णन निम्न प्रकार हैः-

पावनतीर्थ कुरूक्षेत्रः वामन पुराण के २२वें अध्याय में लिखा है कि आदिकाल में महाराज कुरू ने सरस्वती नदी के तट पर आध्यात्मिक शिक्षा एवं अष्टांग धर्म (सत्य, क्षमा, दया, सोच, दान, योग, धर्म और ब्रह्मचर्य) की खेती करने का निश्चय किया. उन्होंने शिव व यमराज से बैल और भैंसा लेकर सोने के हल से खेत जोतना प्रारम्भ किया. प्रति दिन ७ कोस तक भूमि तैयार करते हुए करीब ४८ कोस तक भूमि तैयार की. भगवान विष्णु ने कुरू महाराज से भूमि तैयार करने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं अष्टांग धर्म की खेती करना चाहता हूं. भगवान ने कहा बीज मुझे दे दीजिये. कुरू महाराज ने अपने हाथ फैला दिये, भगवान ने चक्र सहस्त्र टुकड़े करके बो दिये पुनः मांगने पर दूसरा हाथ भी दिया और सम्पूर्ण शरीर को भी दे दिया. भगवान विष्णु अति प्रसन्न हुये और वर मांगने को कहा. कुरू महाराज ने निवेदन किया कि जितनी भूमि मैंने जोती है वह क्षेत्र पुण्य क्षेत्र व धर्मक्षेत्र होकर मेरे नाम से विख्यात हो और समस्त देवता यहां निवास करे तथा इस क्षेत्र में स्नान-दान, यज्ञ-पूजा-पाठ उपवास आदि जो भी श्रेष्ठ कर्म किये जावें, उनका क्षय न हो. तथा जिनकी यहां मृत्यु हो जावे वे सभी पापों से छूट कर स्वर्ग को प्राप्त हों. भगवान ने एवमस्तु कह कर अर्न्तध्यान हो गये और वह क्षेत्र कुरू महाराज के नाम से कुरूक्षेत्र कहलाने लगा. यहां की तीर्थ यात्रा, स्नान, दान-पुण्य आदि से अश्वमेघ और राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त होता है. यही पर द्वापर में कौरव व पाण्डवों के बीच महाभारत का युद्ध हुआ और १८ दिन भीषण संग्राम हुआ. युद्ध के प्रथम दिवस जब अर्जुन ने युद्ध करने से इन्कार कर दिया तब भगवान श्रीकृष्ण ने वेदों व शास्त्रों का सार श्रीमद भगवत गीता रूपी अमृत का पान कराकर कठोर कर्तव्य पालन की प्रेरणा दी. यह स्थान ज्योतिसर नाम से प्रसिद्ध हुआ जो सरस्वती नदी के तट पर है.

यहां पर ब्रह्म सरोवर है, जहां पर सूर्य ग्रहण एवं सोमवती अमावस्या को लाखों तीर्थ यात्री स्नान करते हैं. वैसे प्रत्येक दिन कई तीर्थ यात्री दर्शन करने आते हैं. कहते है कि इसका निर्माण स्वयं ब्रह्मा जी ने किया. इसके अलावा यहां पर कई दर्शनीय स्थान है जिनका वर्णन

महाभारत के वन पर्व, तीर्थयात्रा पर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्ग पर्व में उल्लेख मिलता है. कहते है कि महाभारत युद्ध के पूर्व श्रीकृष्ण व समस्त यदुवंशीय द्वारका से कुरूक्षेत्र सूर्यग्रहण पर स्नान करने हेतु पधारे थे. यहीं पर ऋषियों ने सर्वप्रथम वेदमन्त्रों का उच्चारण किया. महर्षि वशिष्ठ व विश्वमित्र ने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया. थानेश्वर, पानीपत, तरावडी, कैथल, करनाल आदि के युद्ध क्षेत्र इसी क्षेत्र में है. हर्ष के दरबारी कवि वाणभट्ट ने अपने पुस्तक हर्ष चरित्र में वर्णन किया है. चीनी यात्री ह्वेन शांग ने भी इसका वर्णन किया है.

कुरूक्षेत्रं गमिष्यामि, कुरूक्षेत्रे व साभ्यहम,
य एवं सततं ब्रूयात सोअपि पापै प्रभुच्यते
पासवोअपि कुरूक्षेत्रे वायुना समुदीरिताः,
अपि दुष्कृत मणिं नयन्ति परमां गतिन।।
दक्षिणेन सरस्वत्या दधद्वत्युतरेणच,
ये बसन्ती कुरूक्षेत्रे ते वसन्नि त्रि-विष्टथे।

इसी क्षेत्र में ७ वन (काम्यक वन, अदिति वन, व्यास वन, फलकी वन, सूर्य वन, मधुवन व शीत वन) व ७ ही नदियां है (सरस्वती, वैतरणी, आपगा, मधुस्त्रवा, कौशिकी, दषद्वती व हिरणवती) प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर कहा जा सकता है कि महाभारत के युद्ध से लेकर महाराज हर्षवर्धन तक यह क्षेत्र सांस्कृतिक तथा सामाजिक दोनों ही दृष्टि से उन्नति पर था. सन् ३००ईस्वी पूर्व यूनानी राजदूत मेघस्थनीज ने लिखा है कि रात को लोग घरों में ताला नहीं लगाते. चोरी व बदमाशी का नाम नहीं था. स्त्रीयों का चरित्र उच्च कोटि का था और आर्य संस्कृति का यह सर्वोत्तम केन्द्र था.

दधीचि तीर्थ जहां पर वत्रासुर राक्षस को मारने के लिये अपनी हड्डियों का दधिची ऋषि ने इन्द्र को दान दिया था एवं नाभिकमल तीर्थ जहां भगवान विष्णु नाभि से उत्पन्न हुये कमल से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई. इसी सरस्वती नदी के तट पर कुबेर ने यज्ञ किया और यहीं पर मार्कण्डे ऋषि ने अपना आश्रम बनाकर तपस्या की.

थानेश्वर जो बाणगंगा के पास है, जहां पर भीष्मपितामह शरशैया पर सोये और अर्जुन ने जमीन पर बाण मार कर पानी की धारा निकाली, भद्रकाली मंदिर, पहेवा (पृथुदक) यहां पर राजा कर्ण का टीला और हर्ष उद्यान है. ज्योतिसर जो ज्ञान का क्षेत्र है, यहां पर भगवान कृष्ण ने अर्जुन को जो गीता का उपदेश दिया था उसका साक्षी अक्षय वट है. स्थाणवीश्वर शिव मंदिर एवं शेखचिली का मकबरा. ब्रह्मयोनि तीर्थ, सरस्वती घाट, श्रीकृष्ण म्यूजियम आदि कई तीर्थ स्थान है. कहते हैं कि पहोवा तीर्थ में मृत्यु कर्मकाण्ड किया जाता है. ऐसे तीर्थ में पितृकर्म करने वाला पितृऋण से मुक्त हो जाता है.

कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतु र्भूमो ते सगो असत्वकर्माणि।

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार–प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें
प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

हमारी अस्मिता खतरे में क्यों?

महिलाओं की सुरक्षा व्यवस्था का कार्य तो निश्चित ही शासन प्रशासन का है. परन्तु मेरे मन में एक प्रश्न बार-बार उठता है कि हर बात का जबाब देना सरकार की ही जिम्मेदारी क्यों बनती है?

अरे! आज इस चौराहे पर किसी को छेड़ा कल उस चौराहे पर और फिर दूसरे दिन कहीं और तो सरकार कहां-कहां पहुंचेगी.

गौर कीजिये! ये छेड़ने वाले आते कहां से है! इनके मस्तिष्क में इतनी विकृत मानसिकता पनपती कहां से है या महिलाओं के प्रति ऐसी घिनौनी भावनायें तो एक दिन का परिणाम नहीं होती. या ऐसे लोग बचपन से तो ऐसा नहीं करते होंगें.

मेरे कहने का तात्पर्य है कि ऐसी मानसिकता के लोग कहीं न कहीं हमारे समाज का ही हिस्सा है. किसी के पुत्र तो किसी के भाई, किसी के पिता या किसी के पति भी हो सकते हैं.

समाज की सबसे छोटी ईकाई परिवार होती है और सुधार सबसे छोटी ईकाई से ही प्रारम्भ होना चाहिये.

हमारे बीच से संस्कारों का पतन होता जा रहा है. कार्यशील माता-पिता अपने बच्चों को पालने की उत्कृष्ट व्यवस्था कर रहे हैं. परन्तु उन बच्चों के मन में व्यवहारिकता और नैतिकता का बीज भी बोना आपकी जिम्मेदारी है.

जब तक माता-पिता अपनी इस जिम्मेदारी को नहीं समझेंगे-तब तक हमारे बीच कहीं न कहीं दामिनी की चीख सुनायी देती रहेगी.

बाता माता-पिता से होकर विद्यालय तक ओर धीरे-धीरे पूरे समाज तक जाती है. धीरे-धीरे यह जिम्मेदारी समाज के प्रत्येक नागरिक की बनती है कि सभी रिश्तों को सम्मान की दृष्टि से देखें. साथ-साथ अपनी भावी पीढ़ी को भी वही दृष्टि प्रदान करें।

✍श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली'
रायबरेली, उ.प्र.

पत्रिका के सभी पाठकों व देश वासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

हम स्वतंत्र है- गरीबी के लिए
हम स्वतंत्र है- भ्रष्टाचार करने के लिए
हम स्वतंत्र है- बेरोजगारी के लिए
हम स्वतंत्र है-
टूटी-फूटी सड़कों पर चलने के लिए
हम स्वतंत्र है-
नेताओं के झूठे वादे सुनने के लिए
हम स्वतंत्र है-मंहगाई झेलने के लिए
हम स्वतंत्र है-गुडंई झेलने के लिए
हम स्वतंत्र है-
नकली दवाओं का उपयोग करने के लिए
हम स्वतंत्र है-
कभी भी, कहीं भी मरने के लिए

क्योंकि हम मना रहे हैं ६६वां स्वतंत्रता दिवस

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
लेखक/पत्रकार/समाजसेवी
मो0:9335155949
ईमेल:
gokulelshwarkumar@rediffmail.com

पारिवारिक खुशियों के लिए: अनुभूत प्रयोग

साधारण तथा प्रत्येक परिवार में कुछ अशांति या अशुभता की स्थिति प्रायः नजर आती है. सांसारिक जीवन में पंच तत्वों से युक्त बना मानव शरीर से सभी जन विज्ञ हैं. यथा पृथ्वी, आकाश, जल, वायु और अग्नि. कहा है कि 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्ड में भी वही पंच भूतों का समावेश है. सारे ग्रह, राशियां, नक्षत्र, प्राणी एवं घर सभी इनके आधार पर संचालित होते हैं. अतः निम्नांकित उपाय नियमित करने से आम तौर पारिवारिक खुशियों का वातावरण प्रभु कृपा से, गुरु कृपा से बना रहेगा.

उपायः

१. हमेशा मिट्टी के जल पात्र (मटकी, घड़ा, सुराही) का ही जल पीएं. इससे शनि, राहु केतु ग्रह शांत रहते हैं.

२. घर में तुलसी का पौधा लगाएं. प्रतिदिन प्रातः व सायं घी का दीपक करें. इससे घर का वास्तु दोष संतुलित रहता है तथा बुध, चन्द्र व आंशिक शुक्रादि ग्रह शांत रहते हैं. घर की छत पर ईशान कोण में तुलसी का पौधा रखें एवं भवन संबंधी कार्य होता है.

३. परिवार में शयन कक्ष हमेशाा स्वच्छ व सुगंधित रखें. लकड़ी के ही पलंग पर शयन करें तथा उसके सभी पायों के नीचे ताम्बे के प्लेट रखें. इससे बुध ा, शुक्र व आंशिक केतु ग्रह शांति व प्रसन्न रहते हैं तथा परिवार में रोग निवारण होता है.

४. यदि आपकी रसोई उचित दिशा आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) कोण में नहीं है तो रसोई के ईशान कोण (उत्तर पूर्व) में सिन्दूरी रंग के गणपति स्थापित करें. धन-धान्य एवं समृद्धि की बहार रहेगी और दुर्घटनाओं का खतरा भी नहीं होगा.

५. घर की छत पर नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में लाल, पीली, नीली, सफेद व हरे, पंचरंगी पताका (ध्वजा) फहराएं. इससे सूर्य व गुरु ग्रह ही नहीं बल्कि सभी नवग्रह प्रसन्न व शांत रहते हैं तथा समस्त पीड़ाकारक दोषों का निवारण होता है.

६. पितृ दोष निवारण के लिए बुजुर्गो की प्रसन्नता के लिए और आपके घर में शांति के लिए, नौकरी कारोबार में उन्नति के लिए प्रतिदिन प्रातः और सायं काल परिण्डे (पीने के पानी रखने का स्थान) के पास दीपक जलायें.

७. प्रत्येक रविवार को जल में ईत्र मिलाकर प्रातःकाल सूर्योदय वेला एवं सूर्योदय होने पर सूर्य को अर्ध्य देवें तथा 'ॐ हिरण्यगर्भाय नमः' मंत्र का जाप करते हुए एक माला (१०८ नाम) फेरे.

-ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, मेड़ता सिटी, नागौर, राजस्थान

८. प्रत्येक शनिवार को सायंकाल पीपल वृक्ष के नीचे सरसों के तेलन का दीपक जलाएं.

९. राहु की शांति के लिए तथा पितरों की शांति के लिए परिण्डे पर प्रतिदिन सायं काल घी का दीपक जलावें. बुजुर्गो का सम्मान करें.

१०. प्रत्येक मंगलवार को शुद्ध होकर प्रातः काल श्री हनुमान चालीसा का पाठ करें. हनुमानजी के मन्दिर में दर्शन करें तथा गुड़ा का प्रसाद भोग लगावें. लौबान धूप कर सकें तो और भी अच्छा होगा.

११. प्रत्येक शनिवार को श्री हनुमान जी को गुलकंद युक्त मीठा पान चढ़ावे तथा 'ॐ पवनपुत्राय नमः' मंत्र की एक माला (१०८ नाम) जपें. प्रभु कृपा का लाभ, गुरु कृपा से प्राप्त होगा.

शेष पृष्ठ ८ का.... **जय हो हिन्दुस्तान की**

बने. भले ही किसी पार्टी को बहुमत न मिले. किन्तु यदि अच्छे लोग, योग्य व्यक्ति सज्जन और सचरित्र पुरुष विधानसभा और संसद में जायेंगे तो घोटाले नहीं होगे. स्विस बैंको में जमा काला धन नहीं बढ़ेगा तथा देश का विकास तेजी से होगा. चुनाव उन्हीं का किया जाए, जिनमें देशहित और जनहित की भावना हो. स्वहित और पार्टी हित की बात करने वाले को यदि वह योग्य नहीं है, सचरित्र नहीं है, सदाचारी नहीं है, तो कदापि नहीं चुना जाना चाहिए. वोट पार्टी को नहीं, व्यक्ति को दें. यही देशहित में है.

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ -0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

मेरी गंगोत्री, यमुनोत्री की यात्रा

✍श्रीमती संपत देवी मुरारका
हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश

8जुलाई हम लोग त्रिवेणी घाट स्नान के लिए गये, हरिद्वार की हर की पौढ़ी में स्नान किया. स्नान करके मंदिरों का दर्शन करते हुए वापस आ गये. थोड़ा आराम किया, बाद में गंगा पार गीता भवन गये. लगभग एक हफ्ते यह क्रम चला कभी गीता भवन में तो कभी परमार्थ निकेतन में चले जाते. गंगा जी की आरती देखकर वापस गीता भवन आकर रूम में चले गये. श्रावण महीना शुरू हो गया था. गंगाजी हर रोज बढ़ती रहती थी. पहाड़ों पर वर्षा रानी जमकर बरस रही थी. कभी-कभी ऋषिकेश में भी वर्षा हो जाती थी.

लगभग आठ-दस दिन बीत गये, पता हीं नहीं चला. वहां से हम लोगों का गंगोत्री, यमुनोत्री तीर्थ का कार्यक्रम बना.

बस में बैठकर यमुनोत्री की यात्रा शुरू की. ऋषिकेश से यमुनोत्री की दूरी 222 किमी है. हमारी बस नरेन्द्र नगर पहुँची. यह ऋषिकेश से 16 किमी. दूर है. यह नरेन्द्रशाह बहादुर की सन् 1920 की बसाई नगरी है. नरेन्द्र नगर से चम्बा पहुँचें. नरेन्द्र नगर से चम्बा ४६ किमी. दूर है. बहुत ही सुन्दर स्थान है. गर्मियों में भी मौसम सुहावना था. मौसम साफ रहने के कारण यहॉं से दूर-दूर तक फैले बर्फीले दृश्य मन को मोह लिये. चम्बा से टिहरी गये. चम्बा से टिहरी 21 किमी. की दूरी है. यह भागीरथी और भिलंगना नदी के संगम पर महाराज सुदर्शन शाह की बसाई हुई राजधानी है. टिहरी से धरासू पहुँचे. टिहरी से धरासू 37 किमी. की दूरी है. यहॉं से एक मार्ग उत्तरकाशी होता हुआ गंगोत्री की ओर जाता है, और दूसरा हनुमान चट्टी तक जाता है. जहॉं से यमुनोत्री पहुँचते है. हम धरासू से बारकोट गये. धरासू से बारकोट 55किमी दूर है.

हमारी बस कभी नदी किनारे कभी पहाड़ों पर चल रही थी. प्राकृतिक सौन्दर्य इतना रमणीय था कि जितनी भी महिमा का गान करो उतना कम है. हम स्यान चट्टी पहुँचे. बारकोट से स्यान चट्टी 29 किमी. दूर स्थित घने जंगल में एक छोटा-सा गॉंव है. यहॉं से हनुमान चट्टी गये. स्यान चट्टी से हनुमना चट्टी 5 किमी. है. यहॉं बस हमें छोड़ दी. यहॉं से यमुनोत्री तक पैदल यात्रा करनी थी. यहॉं लाईट नहीं थी. लालटेन से काम करते थे. यहॉं पहुँचकर हमने एक रूम लिया. सामान रखा और यहॉं होटल में खाना खाया. सर्दी बहुत थी, यमुनाजी का प्रखर प्रचण्ड प्रवाह कानों में गुँज रही थी. शाम हो गई थी, धीरे-धीरे रात के अंधेरे ने अपने आगोश में ले लिया था. अगले दिन सुबह उठकर एक-एक जोड़ी कपड़े और कुछ सामान खाने का और पूजा का साथ में लिए. पहले दिन घोड़ों वालों से बात कर ली थी. हमने चढ़ाई शुरु की. हनुमान चट्टी से यमुनोत्री 13 किमी. दूर पैदल चढ़ाई का रास्ता है. हम घोड़ों से फूल चट्टी गये. हनुमान चट्टी से फूल चट्टी 5 किमी. दूर है. यहॉं से जानकीबाई चट्टी (कुण्ड) गये. चट्टी से जानकीबाई कुण्ड 2किमी. दूर है. इस कुण्ड में जल साधारण गर्म रहता है. यहॉं हमने स्नान किया. थोड़ा विश्राम भी किया फिर आगे बढ़े. यमुनोत्री पहुँचे.

जानकीबाई कुण्ड से यमुनोत्री 6 किमी. दूर 3323 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गढ़वाल मंडल की हिमालय श्रृंखलाओं में है, हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ है.

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च यमुना यत्रनिस्मृता।
सर्व पाय विनिर्मुक्तः पुनात्यासप्तमं कुलम्।।

कहते है जहॉं से यमुना निकली है, वहॉं स्नान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और उसके सात कुल तक पवित्र हो जाते है. यह यमुना नदी का उद्गम स्थल है. यहॉं यमुनाजी का मन्दिर है. एक ओर यमुनाजी का शीतल धारा बह रही है और दूसरी ओर गर्म जल के स्रोत है. यमुनोत्री मन्दिर दर्शनों के लिए अक्षय तृतीया से दीपावली तक खुला रहता है.

यमुनोत्री के साथ असित ऋषि की कथा जुड़ी हुई है. अत्याधिक वृद्धावस्था के कारण ऋषि जब सप्तऋषि कुण्ड में स्नान करने के लिए नहीं जा सके तब उनकी अपार श्रद्धा देखकर यमुनाजी उनकी कुटिया से ही प्रकट हो गई. यही स्थान यमुनोत्री कहलाता है.

कलिन्द पर्वत से बहुत ऊंचे से हिम पिघलकर यहॉं जल के रूप में गिरता है. इसी से यमुनाजी का नाम कालिन्दी पड़ा. यहॉं गर्म पानी के कई कुण्ड है. उनमें पानी खैलता रहता है. यात्री कपड़ें में बॉंधकर आलू-चावल

उसमें डूबा रखते हैं तो वे पक जाते है. हमने भी चावल डूबाकर रखे तो पक गये, यही प्रसाद रुप ग्रहण किया. इन गरम कुण्डो में स्नान करना संभव नहीं है. स्नान के लिए अलग कुण्ड बना हुआ है. जिसमें जल कुछ शीतल रहता है. यमुना जल भी इतना ठंडा है कि उसमें भी स्नान नहीं किया जा सकता.

एक तरफ यमुनाजी की शीतल ध ाारा बहती है, दूसरी तरफ गरम जल के कुण्ड हैं. यहॉ परशुराम, काली और एकादश रूद्र आदि के मंदिर हैं. काली कमली की कई धर्मशालायें भी है. यमुनोत्री के अद्‌भुत अलौकिक दृश्यों का अवलोकन करते हुए वापस हनुमान चट्‌टी आ गये. केदारनाथ यमुनोत्री की चढ़ाई कठिन, संकरी और डरावनी है. इरादे बुलन्द हो तो कठिन रास्ते भी सरल बन जाते है. हम तीनों ने खाना खाया और विश्राम किया.

यमुनोत्री से वापस वही रास्ते से घरासू से 2 किमी पहले ही एक मार्ग से उतर काशी की ओर मुड़ गई. यमुनोत्री से गंगोत्री 228 किमी. की दूरी पर स्थित है. हम यमुनोत्री से उत्तरकाशी गये. रास्तें में कभी पहाड़ों पर चढ़ना कभी उतरना यह सिलसिला चल रहा था. प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर मन मंत्र मुग्ध हो गये. कहीं-कहीं वर्षा हो रही थी, कही सुखा था. एक जगह पहाड़ गिरे हुए थे. वहॉ के कर्मचारी पत्थरों को हटाकर मार्ग सही कर रहे थे. बस वाले ने आदमियों को उतार दिया और कहा आगे तक पैदल चलों, बस ज्यादा यात्रियों को पत्थरों पर से ले जाना मुश्किल है. स्त्रियों से नहीं चलना होगा इसलिए बस में बैठे रहें. थोड़ी देर के बाद धीरे-धीरे पत्थरों पर चलती हुई समतल जगह आ गई, काफी औरतें बस में बैठी हुई थी, दूर जाकर रूक गई, बाकी यात्री फिर से बस में बैठे बस उत्तरकाशी ले गई.

उत्तरकाशी एक आधुनिक ढंग से बना हुआ लगभग दस हजार की आबादी वाला सुन्दर नगर है. यहॉ इस जिले के प्रमुख कार्यालय है. गंगा के तट पर बसे इस ऐतिहासिक नगर में काफी धर्मशालायें और होटल भी है. यहॉ भगवान विश्वनाथ जी का मन्दिर देखने लायक है. हम तीनों ने विश्वनाथ जी के दर्शन और पूजा अर्चना की, थोड़ी देर विश्राम किया. खाना खाकर बस में बैठे.

गंगनानी से झाला 25 किमी. दूरी पर है. जैसे-तैसे चढ़ाई करते जाते गंगोत्री का रास्ता समीप आता जा रहा था. चढ़ाई खतरनाक और डरावनी थी, फिर भी आगे दिल थाम कर चढ़ाई चढ़ रहे थे.

गंगोत्री हम लोग मोटर से पहुँचे. उत्तरकाशी से 100 किमी की गंगोत्री की चढ़ाई दुर्गम है. यह स्थान हिन्दुओं का एक प्रमुख तीर्थ-स्थान है जो हिमालय के उत्तराखण्ड क्षेत्र में स्थित है. प्रत्येक वर्ष लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते है. आदि शंकराचार्य जी ने यहॉ गंगाजी की मूर्ति स्थापित की है. भागीरथी नदी के किनारे बने इस मंदिर को 18वीं शताब्दी में गोरखा रेजीमेंट के जनरल अमरसिंह थापा ने बनवाया था. जिसका जीर्णोद्धार जयपुर दरबार ने किया था. मन्दिर के आसपास अनेक आश्रम है, इनमें से कुछ में ठहरने की भी पर्याप्त व्यवस्था रहती है. जहॉ आर्डर देने से खाना बनाकर देते थे, वहीं एक रूम लिया. सामान रखा और स्नान करके तैयार होकर मंदिर गए. गंगा का जल बर्फ के समान था. डूबकी लगाते ही माथा सन्न रह गया. यहॉ पास में ही गौरीकुण्ड और केदारकुण्ड है.

गंगोत्री में भागीरथी का विशाल मंदिर है जिसमें गंगाजी, यमुनाजी, सरस्वतीजी, लक्ष्मीजी, पार्वतीजी और अन्नपूर्णाजी की मूर्तियां है. महाराज भागीरथ जी सम्मुख हाथ जोड़े है. यहॉ पूजा का समस्त सामान स्वर्ण का है. यहॉ देवदार का जंगल भी है. थोड़ा नीचे केदार गंगा का संगम है. वहां से पर्याप्त ऊंचाई से गंगा शिवलिंग पर गिरती है. वह स्नान गौरी कुण्ड कहा जाता है.

यहॉ सूर्य कुण्ड, ब्रह्म कुण्ड, विष्णु कुण्ड आदि तीर्थ है. एक विशाल भागीरथ शिला है, जिस पर बैठकर राजा भगीरथ ने तपस्या कर भागीरथी गंगा को अवतरित किया था.

यह कहा जात है कि गंगा जहॉ से अवतरित होती है, वहॉ जाकर तीन रात्री उपवास करके स्नान करने से मनुष्य बाजपेयी यज्ञ का फल पाता है

दर्शन करके गोमुख जाने को तैयार हुए तो वहॉ के लोगों ने कहा कि कल सुबह जा सकते हो. हम थोड़ी दूर चीड़वास गये. यहॉ साधु आश्रम है. ठहरने, भोजन की सुविधा है. यहां हम तीनों थोड़ी देर विश्राम किए. साधू बाबा ने ज्ञान की बातें बताई, हम वापस नीचे आ गये. खाना खाये फिर सो गये.

उस दिन ठंड बहुत ज्यादा थी. रजाई में से निकलने का दिल नहीं कर रहा था. गंगोत्री में करंट की सुविधा बहुत कम समय तक है. लालटेन मोमबत्ती से काम किया जाता है. गोमुख का रास्ता कठिन और दुर्गम है.

गंगोत्री से गोमुख 18 किमी. दूर पैदल मार्ग है. जो भारत की पवित्रतम

कहीं जाने वाली गंगा नदी का उद्गम स्थल है. यह हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में है, इसके आगे गंगोत्री व चतुरोगिणी हिमखण्डों के विशाल क्षेत्र है. यहॉ से शिवलिंग, भागीरथी, सुदर्शन, थेलू व केदारडोम की बर्फ से ढंकी सुन्दर सुशोभित चोटियॉ दिखाई पड़ती है. यह वह स्थान है जहॉ गंगा सबसे पहले हिमखण्ड के गर्भ से बाहर निकलती है और आरंभ करती है अपनी महायात्रा. गौमुख हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है. यहीं पर राजा भागीरथ ने गंगा को भगवान शंकर से कठिन तपस्या द्वारा प्राप्त किया. इसी से श्री गंगा नदी भागीरथी के नाम से प्रसिद्ध हुई. वैसे गंगाजी का मुख्य उद्गम स्थान नारायण पर्वत है, जो ब्रदीनाथजी के ऊपर है. वहॉ से हिम धारा (ग्लेशियर) चलती है. जलधारा के रूप में कभी किसी समय गंगा जी गंगोत्री में प्रगट होती थी, किन्तु हिमालय की हिमराशि जैसे-जैसे घटती गई, गंगा का उदगम हिमालय में भीतर बढ़ता गया, जहॉ गंगाजी हिम के नीचे से जल के रूप में प्रगट होती है. उस स्थान को गौमुख कहते है. संभव है यह दूरी और बढ़ जायेगी. काफी ऊंचाई पर होने के कारण अक्तूबर के बाद यहॉ भारी हिमपात आरंभ हो जाता है. जिसके बाद यहॉ आने-जाने के मार्ग बंद हो जाते हैं. चारों चरफ बर्फ ही बर्फ नजर आती और कुछ नहीं. ताप शुन्य से भी काफी नीचे खिसक जाता है.

गौमुख, पैदल यात्रा करने का मुख्य पड़ाव भोजवासा है. यहॉ चीते और रीछ रहते है, यहॉ कभी भोजपत्रों का घना जंगल था. इसी कारण इस स्थान का नाम भोजवास पड़ा. भोजवृक्ष काफी ऊंचाई पर उगने वाले पेड़ है. इसके तने व डालियॉ पर एक सफेद व महीन छाल चिपकी रहती है, जिसे भोजपत्र कहते हैं. प्रदूषण का भोजवृक्षों पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है जहॉ कभी भोजपत्रों के हरे-भरे जंगल थे, वहॉ आजकल गिने-चुने भोजपत्र ही दिखाई पड़ते है. बातें सुन-सुनकर गोमुख देखने का दिल किया लेकिन जा नहीं पाये.

गंगोत्री का जल रामेश्वर धाम में चढ़ता है. थोड़ा सामान खरीदा, शाम होने को आई. सूर्य भगवान अपनी लालिमा धीरे-धीरे समेटने लगे थे. यहॉ अंधेरा जल्दी हो जाता है. हमने खाना लालटेन की रोशनी में खाया था. विश्राम किया.

अब हमें ऋषिकेश जाना था. गंगाजी में स्नान करके तैयार होकर मंदिरों के दर्शन करके सामान पैक किया और पिट्ठू को बुलाकर सामान उठवाया और बस जहॉ रुकती है और चलती है, वहॉ गये. बस में बैठे ऋषिकेश जाने के लिए, जैसे आये थे वैसे ही आगे प्रस्थान किया. जहॉ-जहॉ बस का पड़ाव था, वहॉ-वहॉ बस रुकती थी.

एक आश्रम के निकट बस रुकी हम तीनों नीचे उतर गये, सामान नहीं उतारा क्योंकि बस वाले ने कहा बस यहॉ ज्यादा देर नहीं रुकेगी. हमें इस आश्रम में भी स्नान करना था, क्योंकि यहॉ के स्नान का भी काफी महत्व बस में बैठे यात्रियों से सुना था. हमने सामान उतारा, बस चली गई.

थोड़ी सीढ़ियॉ चढ़कर आश्रम था नाम नहीं मालुम, यहॉ थोड़ा गर्म पानी पहाड़ो से आता था, वहॉ बड़ा पाईप लगा दिया गया था, जिससे स्नान करने में सुविधा हो. हम तीनों ने स्नान किया, साधु संतो से मिले और फिर से बस का इंतजार करने नीचे आ गये. काफी देर तक बस नहीं आई. डेढ़-दो घण्टे व्यतीत हो गये, हमारे गीले कपड़े भी सुख गये थे. एक बस बुक की हुई आई, जो हरिद्वार से चारों धाम के लिए बुक की हुई थी. हमने हाथ दिखाकर बस को रोका, बस वाले ने कहा, यह बस कलकत्ते से आये यात्रियों द्वारा रिजर्व है. जगह नहीं है. हमने कहा हमें ऋषिकेश जाना है, हम बस की सीढ़ियों पर बैठ जायेंगें. यहॉ काफी देर हो गई है, खड़े होकर तब यात्रियों ने कहा. अन्दर आ जाइये, हमारा सामान बस के ऊपर रखा गया और सज्जन यात्रियों ने हमें थोड़ा-थोड़ा सरक कर जगह दे दी. हमें मुनि की रेती पर उतार दिया, वहॉ हम तीनों ऑटो में बैठकर घर आ गये.

इस यात्रा की खट्टी-मिट्ठी यादों को मन में संजोये रहे. यात्रा के दौरान बीच मझधार में खड़े, हमें बंगालियों ने सहारा दिया उनका एहसान जिन्दगी भर नहीं भूल पाऊंगी.

आवश्यकता है

हिन्दी साप्ताहिक **का बा चर्चा**

हेतु विभिन्न शहरों में संवाददाताओं, विज्ञापन प्रतिनिधियों, शहर/तहसील/जिला व राज्य स्तर पर ब्यूरो प्रमुख की.

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

10 रीवा बिल्डिंग, लीडर रोड इलाहाबाद-211001

मोबाईलः 9935396715, 9335155949

रोहित यादव की लघुकथाएं

नारियल

रोज की तरह यादराम ने नारियलों से भरी रेहड़ी शिव मंदिर के द्वार पर लगा रखी थी. तभी एक श्रद्धालु उसके पास आया और कहा-''भाई, एक नारियल देना.''
श्रद्धालु व्यक्ति की यह बात सुनते ही नारियलों में खलबली मच उठी. वे ढेर से गुड़-गुड़कर यादराम के हाथ के पास आने लगे. यादराम एक नारियल को उठाकर श्रद्धालु को देता, उससे पहले ही एक बुजुर्ग से नारियल ने अन्य नारियलों को डाँटते हुए कहा-''सब पीछे हट जाओ. तुम्हें पता नहीं कि मैं शिव महाराज के श्री चरणों में सौ बार अर्पित हो चुका हूँ. बार-बार बिक कर, मंदिर के पास लगी इन्हीं रेहड़ियों पर आता रहा हूँ. अब एक सौ एक बार शिव महाराज के श्रीचरणों में अपना अर्पण कर अपने आवागमन के सफर को समाप्त कर लूंगा.''
बुजुर्ग नारियल की यह बात सुनकर अन्य नारियल पीछे की तरफ खिसक लिये और बुजुर्ग नारियल यादराम के हाथ में आ गया.

मंदिर-मस्जिद

मंदिर और मस्जिद पर रहने वाले बन्दरों में रहने के स्थान को लेकर झगड़ा हो गया. उनके झगड़े का शोर जब गुम्बद पर बैठे बूढ़े बन्दर ने सुना तो वह दौड़कर उनके पास आया और गुस्से में आकर बोला-''मूर्खों, तुम मंदिर-मस्जिद के लिए झगड़ा कर रहे हो. यह बहुत ही गलत बात है. ये दोनों तुम सबके हैं. इन पर झगड़ा तो धरती का सबसे समझदार कहा जाने वाला 'मानव' ही कर सकता है. यह बात उनके अधिकार क्षेत्र में आती है. तुम मानव नहीं, बन्दर हो. तुम देखते नहीं, आये दिन मंदिर-मस्जिद को लेकर मानवों में कितना झगड़ा और खून-खराबा होता है. अनेक बार तो जाने भी गई हैं. फिर भी मंदिर-मस्जिद को लेकर झगड़ते ही रहते हैं. तुम्हें उनके अधिकार क्षेत्र में घुसने की कोई जरूरत नहीं है. बस तुम बन्दर ही बने रहो. वरना ठीक नहीं होगा।''
झगड़ने वाले बन्दरों ने बूढ़े बाबा की बात को समझ लिया और सहमति से अपना सिर हिला दिया.

लाठियाँ

स्वतंत्रता दिवस समारोह से लौट रहे एक स्वतंत्रता सेनानी से पत्रकार ने पूछा-''आजादी से पूर्व तथा आजादी के बाद की स्थिति में आप क्या अन्तर महसूस करते हैं?''
यह प्रश्न सुनकर स्वतंत्रता सेनानी ने पहले तो लम्बा साँस लिया और फिर कहा-''अन्तर सिर्फ इतना है कि गुलामी में जनता लाठियाँ सिर पर खाती थी, अब आजादी में दिल पर खा रही है.''

कितना सच कितना झूठ

मंत्री जी का ओजस्वी भाषण सुनकर सभागार में उपस्थित सभी श्रोता गद्गद हो उठे थे. मंत्रीजी ने अपने भाषण में लोगों से चहुंमुखी विकास कराने के वायदे ही नहीं किये अपितु वचन भी दिया. इस पर लोगों ने सभागार को तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजा दिया.
तालियों के गड़गड़ाहट के बीच अशोक ने अपने मित्र से पूछा-''भाई राजेश, आप मंत्रीजी द्वारा लोगों से किए गए विकास के वायदे तथा वचन को कितना सच्चा मान रहे हैं?''
अपने मित्र का प्रश्न सुनकर राजेश ने अपनी नजर मंत्रीजी पर डाली और बड़े आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया-''मैं मंत्रीजी द्वारा किए गए वायदों तथा वचन को उतना ही सच्चा मानता हूँ, जितना रात के समय सूरज का निकलना.''
फिर उन दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा। एक व्यंग्य भरी मुस्कान उनके चेहरे पर थिरक आई।

-पत्रकार, मंडी अटेली, हरियाणा

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

संपादक
विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

आवश्यक सूचना

विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें. यह योजना प्रतियों के उपलब्ध रहने तक लागू रहेगी.

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगे. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30.092013 तक.

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

पत्रिका के प्रकाशन के १२वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं. कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..................................दिनांक............
बैंक का नाम..
2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक............

हस्ताक्षर

नाम :...
पता :...
....
.....पिन कोड...........
दूरभाष/मो0..........................ईमेलः..............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/-	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/-	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/-	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/-	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/-	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद -211011, उ.प्र. ई-मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

हिन्दीत्तर भाषी रचनाकार

देश का सपना

तुम देश का भविष्य हो
ये मेरे प्यारे बच्चे।
देश को महान बनाना है
तुम हो दिल के सच्चे।
झगड़े-कलह कभी न हो
सब मिल-जुलकर रहना है।
द्वेष-घृणा अब त्यागकर
सब जीवन अमृत पाना है।
ईमानदारी नेकी से
धर्म की उपासना करना है।
किसी बातों से बहकना नहीं
संस्कृति सब में भरना है।
सयूमं कभी खोना नहीं
काम-क्रोध को जलाना है।
सनातन के संतान है हम
सब से प्रेम भाव जताना है
सारे जहाँ में लहराना है
देश को सबसे महान बनाना है।
मातृभूमि पवित्र है हमारी
नोच न लगे यही एक सपना है.

मां और ईश्वर

माना इस संसार ने
उसने जन्म दिया है,
पर क्या उसने अपने
कोक में हमें जगह दिया है?
किसी में जान भरना
जितना महत्वपूर्ण मानते है,
तो इसे क्यों नहीं मानते
उसे पाल-पोसना क्यों भूलते हैं?
सृष्टि किया है उसने
ऋतुओं को एक-अनेक,
क्यों सबको संदेह नहीं होता
सोचो क्या उसके रास्ते हैं नेक?
माँ पिलाती है हमे
धूप में ठंडा पानी
सर्दी में देती गरमा-गरम पानी
क्या है उसकी ऐसी कहानी?
भूखे को रोटी खिलाती
लंगडे को सहारा बनती है
ऐसी कौनसी बात है उसमें
जो दिन रात पूजा घर सजती है?
माँ को सभी ने देखा है
बहुत करीब से जाना है
उसने कभी किसी को दर्शाया है
ऐसी कौनसी बात उसमे पाया है?
यह तो माना है सबने
माँ सिर्फ माँ नहीं है
परम माता-पिता अपनाया है
अब कौन श्रेष्ठ माना माँ और ईश्वर?

स्त्री

सच मानते हैं
स्त्री से हुआ रामायण
सच कहते हैं
स्त्री से हुआ महाभारत.
पर क्यों ये भूलते हैं
बिना स्त्री के
राम कैसे बनते पुरुषोत्तम,
माँ हमारी जननी
जो है एक स्त्री
सुख-दुख की अर्धांगिणी
जो है एक स्त्री
हर कामयाबी के पीछे
जो है एक स्त्री
इतने समझदार हैं
फिर क्यों मारते बेटियाँ
बेटियाँ सजाती घर-आँगन
सदा बाबूल की
सेवा करती सास-ससूर की
पति को माने परमात्मा.
स्त्री जो है हमसफर
स्त्री जो है हमदर्दी
स्त्री में है जो शक्ति
किसमे है ओ सहन शक्ति
माँ-बहन-पत्नी
न जाने इस दुनिया में
कौन-कौन सी पात्र निभाती
क्या-क्या सहती
नदी बहुत सहती
सो नदी का नाम स्त्री है
धरती हो या संस्कृति या मुल्क
सभी को स्त्री में पाया गया,
अब स्त्री सिर्फ स्त्री नहीं
मानव के लिए
है सबकुछ
स्त्री है सबकुछ

-सुनील पारिट
जन्मः ०१.०१.१९७९, मातृभाषाः कन्नड़
शिक्षाः एम.ए, एम.फिल, बी.एड., पी.एच.डी
लेखन विधाः कविता, लेख, ग़ज़ल, लघुकथा, गीत और समीक्षा
संपर्कः सरकारी माध्यमिक पाठशाला, लक्कुंडी-५९११०२, बैलहोंगल, बेलगाम, कर्नाटक

रुखी रोटी खाकर भी निर्धन करे आराम,
मखमल के गद्दों पर, करवट लें श्रीमान।
करवट लें श्रीमान, रात भर नींद ना आती,
टूटी खटिया, रुखी रोटी, याद गरीबी आती।
ए.कीर्तिबर्द्धन, फेसबुक

कविताएं

आकांक्षा

आकांक्षा!
उत्तरोत्तर बढ़ती-आकांक्षा!
जिनके बोझ तले-दबा
मानव! हो गया है
विक्षिप्त!/अवचेतन!
पूर्ति हेतु-
यंत्रवत जी रहा है!
सांसे गिन रहा है।
अभावों में जीना-
हो गया है दूभर!
दुखों के ऑचल से-
मुँह ढापे
उखड़ी-उखड़ी चाहते;
मन में समाए/आहत;
विह्वल
सब कुछ पाकर भी
सब कुछ लुटाए सा
स्वयं को सांसो की सलाखों में
कैद किए-
तनती सांसों की डोर पर;
छेड़ देना चाहता है-
ससाम!/जो कर दे दूर-
उसके सभी गम!
अस्ताचलगामी सूर्य की भांति-
छिप जाना चाहता है-
गगन की तन्हाईयों में!
आकांक्षा लिए-
श्मशानी लिवास पहिन-
डूब जाना चाहता है
'मन-मतस्य' जीवन समुद्र की गहराईयों से
भूल जाने का आकांक्षी!
मन! चाहता है सब कुछ भुला देना!

-**सुनीता शर्मा**, गुड़गांव, हरियाणा

ना छेड़े

प्रकृति से छेड़छाड़,
आज करते हैं।
उसका हर्जाना,
कल भरते हैं।

तुलना

मन की सुन्दरता,
तन की सुन्दरता को।
निश्चित ही हराती है,
सत्य का पथ दिखलाती है।

-**डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा**,
ग्वालियर, म.प्र.

बलात्

पुरुष ने कहा
चार महिलाओं ने
उसके साथ बलात्कार
किया है
पुलिसवाले उसे पागल
समझकर हंसने लगे
और पूछने लगे मजाक में
कैसे-कैसे।
महिला ने कहा-इस
पुरुष ने मेरे साथ
बलात्कार किया है।
पुलिसवालों ने फौरन
एफ.आई.आर. लिखी
और पुरुष को जेल
भिजवा दिया।
जबकि पुरुष सच
कह रहा था
महिला झूठी थी।
ये सब तो ताकत का खेल है।
कौन समझाये।
कौन समझे।

-**देवेन्द्र कुमार मिश्रा**,
छिन्दवाड़ा, म.प्र.

मदिरा

मदिरापान करो नहीं यह है दूषित कर्म
नीच कर्म करते हुए जरा न आती शर्म
जरा न आती शर्म बुद्धि कुंठित हो जाती
हत्या, लूट, बलात्कार यह सब करवाती
अच्छा बुरा न दिखता छा जाता अज्ञान
'राम' बचा लो जीवन छोड़ो मदिरापान

नशा

नशा कोई भी हो बुरा करता बुद्धि नाश
खोये मन की शांति, होता जाता हास
होता जाता हास, वासना मन में भरता
तनदुर्बल, मन दूषित होता क्रोध उभरता
दुश्मन हंसता, कहता साला खूब फंसा
'राम' बचा लो जीवन करना नहीं नशा

-**राम आर्य 'व्यथित'**, विदिशा,म.प्र.

नेत्रदान चालीसा

जिनकी आँखें देखती, सपनों का संसार।
नयन मूँद वो जान लें, अंधों का संसार।।
जीते परमार्थ में, दीजै खुद को वार।
नेत्रदान से कीजिए, मरकर भी उपकार।।
देह मिलेगी राख में, खाक रहेगा सार।
नेत्रदान से हो गया, अंधो का उद्धार।।
मैं लिखता, वो लिखवाता।
मेरा बस, इतना नाता।।

-**संकलनकर्ता-राकेश दाधीच**,
जयपुर, राजस्थान

लल्लन टाप

एक औरत की दूसरे शहर में नौकरी लग गई. वहां पहुंच कर उसने सोचा कि अपने पति को मैसेज कर दूं. गलती से वो मैसेज किसी और के पास चला गया. जिसके पास मैसेज गया वो आदमी अपनी पत्नी को दफनाकर आया था. आदमी मैसेज पढ़ते ही बेहोश हो गया! मैसेज कुछ ऐसा था-'मैं यहां खैरियत से पहुंच गई हूं, यहां मोबाइल की सुविधा भी है, तुम उदास मत होना, २-३ दिन में तुम्हें भी अपने पास बुला लूंगी.'

कविताएं

देश बटा है बट मारों में,

देश बटा है बटमारों में, अलगावों के नारों में
आज सुरक्षा खतरे में है, होड़ लगी हत्यारों में
क्या समझायें, कैसे बोलें, किस को दर्द बतायें हम
केशर की क्यारी रोती है, तड़प रही है, पलकें नम
आज दिशायें छद्माच्छादित व्याकुल हैं, चिंतित जनजन
षड़यंत्रों के चक्रव्यूह में पराधीन मेरा चिंतन
घोर स्वार्थ में डूब रहे हैं दूषित हुआ राष्ट्रांगन
हिंसा की दुघर्ष वासनाओं से ग्रसित लोकायन
नित्य अधर्म पनपता जाता, कुंठित हुआ धर्मदर्शन
चारित्रिक अपकर्ष बढ़ा है, रे कैसा यह अधःपतन
क्या चिंतन मर गया तुम्हारा, क्यों संवेदनहीन हुए
सत्ता के गलियारों में क्यों तुम नैतिकता हीन हुए।
दूर क्षितिज से हमें दिखाई देता है वह अंधियारा
सीमाओं का शीलभंग कर घूम रहा है हत्यारा।
न्याय केन्द्र ढुल गये, प्रमादी हुए बदचलन उपदेशक
प्रस्तावक, अनुमोदक बिगड़े भटक रहे खुद ही प्रेषक
देशभक्ति अब देशद्रोह में पारंगत है परिभाषित
ओछे हथकंडे अपनाते दुष्वृत्ति से अनुप्राणित
राजनीति वेश्या सी लगती, वायुमंडल प्रदूषित
शुभचिंतक पिसते जाते हैं, मानवता जर्जर लुंठित।
इस चिंतन पर नजर घुमाओं, अंदर झांको अपने में
कौन साथ देता है इसमें किसका हाथ पनपने में
प्रतिफल क्या बलिदानों का, कितने अरमान संजोये थे
मॉ ने अपने अमर लाड़ले कितने बेटे खोये थे
इसीलिये कहता हूँ अब, सब मिलकर गहन विचार करें
स्वार्थलिप्त होकर तुम कोई मत अपनी हद पार करो
दंड विधान कठोर बनाओ, पापों का गढ़ टूटेगा
शील, अस्मिता बची रहेगी कोई न पापी लूटेगा।

—**राम आर्य 'व्यथित'**, विदिशा, म.प्र.

प्रतीक्षा

बलमा मैं भूखी सो गयी, तुम जल्दी से आ जईयों।
ख़्वाबों में तुम्हारे खो गयी, तुम भूल मुझे ना जईयों।।१।।
यह शौक तुम्हारा अच्छा है, घर में नहीं छोटा बच्चा है।
अब उमर भी आधी हो गयी, तुम जल्दी से आ जईयों।।२।।
रचनाएं अच्छी होती हैं, घटनाएं सच्ची होती हैं।
मैं भी सहभागी हो गयी, तुम जल्दी से आ जईयो।।३।।
माता को तुमने याद किया, पिताजी ने आशीर्वाद दिया।
मैं तो बड़भागी हो गयी, तुम जल्दी से आ जईयो।।४।।
मुझे कभी नहीं धोखा देते, मैं रूठूँ नहीं मौका देते।
मैं अति विश्वासी हो गयी, तुम जल्दी से आ जईयों।।५।।
तुम मेरे पति परमेश्वर हो, आप साक्षात् देवेश्वर हो।
मैं भक्त तुम्हारी हो गयी, तुम जल्दी से आ जईयो।।६।।
बलमा मैं भूखी सो गयी, तुम जल्दी से आ जईयों।

-**सुरेन्द्र सिंह राजपूत,** बिजनौर, उत्तर प्रदेश

सब ठीक ठाक हौ

बापू पड़ल रहे परदेस इहाँ सब ठीक-ठाक हौ।
मन में न रखिहे तू क्लेश इहाँ सब ठीक-ठाक हौ।।
अहिंसा से 'अ' हटाइ के कहीं न बहरे फेकली।
जहाँ रहल ओही जगहे पर साथ सत्य के रखली।
हिंसा अउर असत्य राह पर चलत हौ चौचक देस,
इहाँ सब ठीक-ठाक हौ। बापू पड़ल रहे........
अहड़ी-पहड़ी हड़पि लिहेसि कुछु चीन त बोले का बोलीं।
छोट-मोट बाती के ले के शांति नीति हम का तोड़ीं।
कोई कुछ्छौ करउ न भूलब हम तोहरा उपदेश,
इहाँ सब ठीक-ठाक हौ। बापू पड़ल रहे..........
अपने-अपने के सब मालिक आपन-आपन सोचत हौ।
जेकरे जेतना दमखम हउवइ लोकतंत्र के नोचत हौ।
लाजि-शरम जे छोड़ि दिहे बा उहइ करत बा ऐश,
इहाँ सब ठीक-ठाक हौ। बापू पड़ल रहे.........
अपराधी तक हवैं सुरक्षित बापू तोहरे खादी में।
हाँफि-काँपि दिन नापि के जनता जियत हवै आजादी में।
तूँ तनिकउ चिन्ता मत करिहे मन के लागी ठेस,
इहाँ सब ठीक-ठाक हौ। बापू पड़ल रहे........
नारी समाज क करत हईं कुछु गिनल-चुनल अगुवाई।
चढ़ी पछिउहाँ रंग जब पूरा पछिवईं देखि लजाई।
आधा कपड़ा उतरि चुकल हौ आधै हौवइ शेष,
इहाँ सब ठीक-ठाक हौ। बापू पड़ल रहे ....
काशमीर में लगइ न बीजा ना बसबे क सुबिधा हौ।
देस-विदेस कहीं का एके एही बात क दुबिधा हौ।
नेहरू जी से पूछि क भेजिहे तूँ जल्दी संदेश,
इहाँ सब ठीक-ठाक हौ।
बापू पड़ल रहे ....

——**अजय चतुर्वेदी 'कक्का'**
सोनभद्र, उ.प्र.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), **02-डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), **03—हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), **04-राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **05-राष्ट्रभाषा सम्मान** -(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) **06-कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) **09-राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), **10-पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), **11-सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) **12-प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) **13-युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, **18-विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), **19-डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) **24-विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

विशेषः१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०ः ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः...
पताः...
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः..विधा....................वर्ष.........................
प्रेषित प्रतियाँ............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................
संख्या........................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए 10 गीत/10ग़ज़ल/10 नई कविताएं/100दोहे **गद्य खण्ड** के लिए 5 लेख/5 संस्मरण **कहानी खंड** के लिए 5 कहानियां/10 लघु कथाएं
प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को 15 पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व 1500/रुपये 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

जीवन के उस पार

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भाग-०३

इसी यमलोक के अन्तिम छोर पर दो मार्ग अंग्रेजी के वी अक्षर की तरह अलग होते है. एक मार्ग स्वर्ग लोक को दूसरा मार्ग नर्क लोक को जाता है. जो पुण्य आत्मायें हैं उन्हें मृत्युपरान्त ही देवलोक से विमान आता है. उनकी यात्रा देव विमान से सीधे यमराज के दरबारमें हाजिरी देने के बाद स्वर्गधाम में प्राप्त होता है. उन्हें सभी भौतिक सुख सुविधायें स्वर्ग मार्ग में प्राप्त होती है. जो साधारण आत्मायें हैं उन्हें स्वयं ही ब्रह्माण्ड लोक की यात्रा कठिनाइयों से रूबरू होते हुए पार करना होता है. जो दुष्ट और पापी आत्माए हैं उन्हें यमराज के जल्लाद यातनाएं देते हुए यमराज के दरबार में पेश करते हैं. ऐसे अनेक दुष्ट पापी आत्माएं हैं जिन्हें जल्लाद लोहे के जंजीरों में जकड़ कर पीटते-ठोंकते हुए ले जाते हैं. इस ब्रम्हाण्ड मार्ग में हजारों की संख्या में आत्माओं का आवागमन चौबिसों घंटे होता है. कोई चीख पुकार करता है तो कोई खुशी से नाचता गाता अनन्त मार्ग की यात्रा करता है. यहां कोई सांसारिक सगा संबंधी उसका साथ नहीं देते. केवल उसके कर्मानुसार दो यमदूत उसके साथ होते हैं. ब्रम्हाण्ड लोक में कोई भी प्राणी वस्त्रधारी नहीं होता. सुक्ष्म नग्न देह धारी होते हैं. नंगे पांव ही अंगारों पर चलकर यात्रा पूरी करनी पड़ती है.

धर्मशास्त्रों में अध्यात्म को मोक्षमार्ग बताया गया है, किंतु ब्रम्हाण्ड लोक में केवल चार ही मार्ग है-दिव्यमार्ग(स्वर्ग), यक्षममार्ग (परलोक), सममार्ग (ब्रम्हाण्ड)और तत्वक्षम मार्ग(नर्क). यक्षम मार्ग और सममार्ग ब्रम्हाण्ड की परिधि में ही समाप्त हो जाते है. तत्वक्षम मार्ग ब्रम्हाण्डलोक की परिक्रमा पूर्णकर पूनः मृत्युलोक को आता है. मृत्युलोक जिसे कर्म लोक और नर्क लेक के रूप में जाना जाता है. ब्रम्हाण्ड को ही मोक्षलोक कहा गया है. जहां पहुंचने के बाद आत्मा पुनः जन्म-मृत्यु योनि को प्राप्त नहीं होता. किंतु कलियुग में मोक्ष लोक की प्राप्ति मनुष्य को संभव नहीं है. कवि ने सही ही कहा है-'बहुत कठिन है डगर पनघट की' मोक्ष लोक का उल्लेख पनघट से किया गया है. धर्म, कर्म, अध्यात्म और परमार्थ मार्ग में विकट अंधकार है. जो ब्रम्हाण्ड लोक के उस पार जाता है. इस मार्ग में सहज प्रवेश संभव नहीं है. जप, तप, और कर्म ज्योत प्रजवलित करने के बाद ही सदकर्म ज्योति के प्रकाश के सहारे ही इन मार्गो में आगे बढ़ा जा सकता है. यही मृत्युपरान्त का अनन्तमार्ग है. जो सीधे स्वर्ग-यक्षम-सम तथा तत्वचम लोक में प्रवेश संभव है. चौराहे पर खड़ा होकर आत्म निर्णय नहीं कर पाता कि उसे किस मार्ग में जाना है. मृत्यु बाद आत्मा को पूनः मृत्यूलोक में वापस लौटना भी संभव नहीं है. इस परिस्थिति में आत्मा ब्रम्हाण्ड में ही भटकता रहता है या अपने कर्मानुसार भूत-प्रेत चाण्डाल योनि को प्राप्त होकर यातनाएं भोगता है. इसलिए मृत्युपरान्त आत्मा को किस मार्ग पर जाना है? जीवन रहते उसकी पहचान कर पाना मनुष्य के लिए संभव नहीं है. गूढ़ अध्यात्मिक ज्ञान से ही मृत्यूपरान्त की स्थिति को जाना जा सकता है. यह बस सदगुरु के कृपादान से ही संभव है. फिर भी प्रत्येक जीव प्राणी को आयुपूर्ण होने के बाद इस मृत्यु लोक को छोड़ कर परलोक को जाना आवश्यक है. परन्तु प्रत्येक मनुष्य जन्म लेने के बाद इस सत्य को भूल जाता है. सदकर्म से विरक्त होकर सांसारिक माया मोह लोभ अहंकार में संलिप्त होकर जीवन कर्तव्यतत्व को भूल जाता है कि वह संसार में क्यों आया है? यह तो मृत्युलोक का नियम और पंचपत्विक परम्परा है. प्रत्येक मनुष्यों को सांसारिक मर्यादाओं में रहते हुए लोग माया मोह अहंकार से अलग रहते हुए परमार्थ कर्म में संलिप्त रहना चाहिए. हमेशा यह सोचना चाहिए कि जो सांसारिक वैभव सुख सुविधाएं वह उसका नही है. सब कुछ नाशवान है, भौतिक संसार में ही रह जाता है. मनुष्य यह नहीं सोचता कि क्या लेकर आया था? मृत्युबाद क्या साथ लेकर जायेगा? अरबों करोड़ो की संपत्ति अकर्म के द्वारा अर्जित तो कर लिया उसमें से एक कौड़ी भी साथ लेकर नहीं जायेगा तो फिर यह अरबों करोड़ों की सम्पत्ति

उसके किस काम की है? इसे जरूरत मंदो में बांट देना ही उचित है. दीन-दुखियों में बांट देना ही सदकर्म है. अपने लिये जीवन यापन किया तो क्या किया? दूसरों के लिए जीवन यापन करना ही परमार्थ और सार्थक जीवन है. मनुष्य ने अपना सम्पूर्ण जीवन माया-मोह लोभ और अहंकार में व्यतीत कर दिया, कभी जीवन के बारे में नहीं सोचा. चिंतन मनन नहीं किया कि वह स्वयं कौन है? मृत्यु तो स्वाभाविक है., मृत्युबाद कहां जाना है? यह कभी नहीं सोचा? इसी कारण सब कुछ होते हुए भी वह जीवन भर दुःखी रहा है. जो मनुष्य समय रहते अपने आपको परब्रम्ह परमात्मा के सुपूर्द कर देता है. वह व्यक्ति कभी भी जीवन भर दुखी नहीं रहता. क्योंकि वह जानता है इस भौतिक संसार में उसका अपना कुछ भी तो नहीं है. जो यह संकल्प कर ले तो फिर दुःख पीड़ा और अभाव कैसा? अज्ञान मनुष्यों को मृत्युलोक की यातनाओं से मोक्ष प्रदान कर देता है. इसलिए ज्ञान की प्राप्ति इतना सहज नहीं है. अपने जीवन भर किये गये कर्म पर कभी चिंतन मंथन नहीं किया कि हमने जीवन में क्या खोया और क्या पाया? पाया तो कुछ भी नहीं, मगर सम्पूर्ण जीवन खो दिया? जीवन के अंतिम पायदान पर पहुंच कर सोचने से क्या होता है? 'अब पछताये क्या होत है जब चिड़िया चूंग गई खेत?'

क्रमशः

राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जन-जन की भाषा हिन्दी अपनाये भ्रष्टाचार भगायें।

दाऊजी

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के आगामी परिचर्चा का विषय

1—विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां तक जायज?

2-मंहगाई मूल कारण एवं निवारण

3-भारतीय पुलिस की संवेदनहीनताः कारण एवं निवारण

परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम 250 शब्दों में, एक फोटो के साथ क्रम संख्या 01, 02, व 03 के लिए क्रमशः 15 सितम्बर, 15 अक्टूबर, 15 नवम्बर 2013 तक मेल करें या भेजें। मेल हिन्दी कृति देव फान्ट में ही भेजें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा.

स्वास्थ्य

पहचानिये आमला की शक्ति को

आमला एक ऐसा फल है जो प्रकृति ने हमें वरदान के रूप में दिया है. आमला से तैयार मुरब्बा, मिठाई, जैम, पाउडर, अचार, जूस आदि स्वास्थ्य के लिये बहुत ही लाभकारी होते हैं. कई लोग तो इसे कच्चा ही खाते हैं लेकिन इसके गुण के बारे में ज्यादा पता नहीं होता. आंवले में विटामिन सी भरपूर होता है. हर इंसान को प्रतिदिन ५० मिलीग्राम विटामिन सी की जरूरत होती है तो ऐसे में अगर आप एक आंवला खाते हैं तो आपको दो संतरे के बराबर विटामिन सी प्राप्त होगा। इसके अलावा भी कई गुण होते हैं १-यदि नाक से खून आना बंद नहीं हो रहा है तो आमले के रस की कुछ बूंदे नाक में डाल लें. केवल पांच मिनट में खून बहना बंद हो जाएगा. जिन्हें नक्सीर की समस्या हमेशा रहती हो, उन्हें आमले का जूस पीना चाहिये और पेस्ट को सिर पर लगाना चाहिये. २-५ ग्राम आवले का पाउडर नियमित रूप खाने से बाल हमेशा काले रहेंगे और आपके अदंर बुढापे तक शक्ति बनी रहेगी. ३-रोजाना आमले का जूस पीने से आपका शुगर लेवल बिल्कुल कंट्रोल में आ जाएगा और आपको मधुमेह से मुक्ति मिल जाएगी। ४-आमले को पीस कर उसके पेस्ट को अपने सिर पर लगाइये, इससे तुरंत सिरदर्द दूर हो जएगा। ५-रोजाना आमला का मुरब्बा खाने से दिमाग तेज बनता है। ६-आमला के पाउडर को किसी भी तेल में मिलाइये और उससे खुजली वाली जगह पर मसाज कीजिये। इससे आपको एक्जिमा जैसी बीमारी से मुक्ती मिलेगी। ७-जो लोग स्वस्थ रहना चाहते हैं वो ताजा आंवला का रस शहद में मिलाकर पीने के बाद ऊपर से दूध पियें इससे स्वास्थय अच्छा रहता है। दिन भर प्रसन्नता का अनुभव होता है। नई शक्ति व चेतना देता है। ८- ३ ग्राम आमला पाउडर और ६ ग्राम शहद को एक महीने तक खाने से महिलाओं में वाइट डिस्चार्ज की समस्या दूर होती है।

स्वतंत्रता दिवस की सभी पत्रकार बन्धुओं की हार्दिक शुभकामनाएं

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र.
09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com, **Website**: www.mediaforumofindia.com

डॉ0गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
राष्ट्रीय अध्यक्ष

डॉ0सोसन एलिजाबेथ
राष्ट्रीय सचिव

महेन्द्र कुमार अग्रवाल
राष्ट्रीय महासचिव

सकारात्मक प्रभाव वाली खबरों को प्रमुखता दें पत्रकार

सुलतानपुर. पत्रकारिता में असावधानी घातक है अतः हमें सतर्क होकर समाज में सकारात्मक प्रभाव वाली खबरो को प्रमुखता देनी होगी जिसमें अपने विवेक व सार्थक चिन्तन का प्रयोग करना होगा. हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि हमारी पत्रकारिता पाठकों के लिए सर्वथा उपयोगी हो. इसके लिए हमें समय-समय पर आत्म समीक्षा भी करते रहना चाहिए जिससे हम पत्रकारिता के उच्च आदर्शो व मानदण्डों को भी स्थापित करने में सहायक हो सकें.

उपरोक्त उद्गार भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की सुलतानपुर इकाई के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर आयोजित पत्रकारिता प्रशिक्षण कार्यशाला मे बतौर मुख्य वक्ता निदेशक, मदन मोहन मालवीय पत्रकारिता संस्थान डा० ओम प्रकाश सिंह जी ने उस समय व्यक्त किए जब वे प्रेस क्लब में आयोजित कार्यशाला में पत्रकारो को सम्बोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि आज संचार क्रांति ने पत्रकारिता की दुनियां ही बदल दी है जिसके अनुरुप पत्रकारो को भी बदलना होगा. पत्रकारिता में हमें नई तकनीक का प्रयोग करने का प्रयास निरन्तर करना होगा.

कार्यशाला के विशिष्ट वक्ता सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चर्चित पत्रिका **कथासमवेत** के सम्पादक डा. शोभनाथ शुक्ल ने अपने उद्बोधन में साहित्य और पत्रकारिता के अर्न्तसम्बन्धो पर सविस्तार चर्चा की तथा अनेक बारीकियों को बहुत प्रभावी ढंग से व्याख्यायित किया. डा. शुक्ला ने पत्रकारिता के क्षरण पर चिन्ता जतायी और भाषा की आत्मा बचाने की पहल के लिए पत्रकारो से आगे आने की अपील की.

अपने सारगर्मित उद्बोधन में भारत सरकार द्वारा आयोजित मास कम्यूनिदकेशन कोर्स प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया विंग के ऐंकरिंग कोर्स के प्रमुख अजय पत्रकार ने पत्रकारिता के अनेक गुण बताये इन्होंने पत्रकारो को कई अच्छे टिप्स दिये.

प्रारम्भ मे भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने कार्यशाला की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और बताया कि देश भर में इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ करेगा. अतिथियों व पत्रकारो का स्वागत महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष विजय विद्रोही ने किया. संचालन राष्ट्रीय प्रवक्ता सत्य प्रकाश गुप्त ने किया. प्रदेश महासचिव अशोक मिश्र एवं जिलाध्यक्ष डा. आदित्य दूबे ने आभार व्यक्त किया. पत्रकार महासंघ की सदस्यता के लिए देशभर के पत्रकारों से आग्रह किया गया वे अपना सदस्यता फार्म अध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ, गंधियांव करछना इलाहाबाद २०१२०१ के पते पर पता लिखा लिफाफा भेजकर मंगा सकते हैं. ई-मेल से फार्म प्राप्त करने कें लिए bpusahitya@rediffmail.com पर संपर्क कर सकते हैं।

विश्व स्नेह समाज का अब सदस्यता शुल्क देना बिल्कुल आसान

१. अपने आसपास ही विजया बैंक की किसी शाखा में जाए, खाता संख्या 718200300000104 में अपनी सदस्यता राशि जमा करें,

२. एक पोस्टकार्ड पर जमा की तारीख लिखकर भेज दें यां vsnehsamaj@rediffmail.com पर ईमेल करें.

कहानी

पहचान

-डॉ.मोहन तिवारी'आनंद'
भोपाल, म.प्र.

शहरीकरण की होड़ में बड़ी तेजी से आगे बढ़ने वाला नाम भोपाल अब किसी पहचान का मोहताज नहीं रह गया है. आजकल इसे शिक्षा का प्रमुख केन्द्र माना जाने लगा है. न केवल देश के कोने-कोने से छात्र शिक्षा लेने यहां आ रहे हैं बल्कि विदेशों में भी यहां बच्चे पढ़ाने की होड़ सी लग गई है. मुझे तो अपने आप पर गर्व है कि मैं भोपाली हूं. मेरा स्वयं का आलीशान मकान है इस शहर में और मेरे बच्चे यहीं से पढ़कर उच्च शिक्षित हो अच्छी खासी नौकरी में हैं. इस तरह के शब्द बड़े गौरव के साथ कहते हुए मिल जाते हैं लोग.

भोपाल से सटा हुआ नया बसा उपनगर कोलार रोड वर्ष १९९५ के बाद ही विकसित हुआ कहा जा रहा है किन्तु आजकल तो भोपाल का सबसे अधिक विकसित क्षेत्र कहा जाने लगा है. यहां की बसाहट काफी सुनियोजित है. नई बसी कॉलोनियों में उत्तम सफाई व्यवस्था, चौड़ी-चौड़ी गलियां, पक्की सड़कें, सुन्दर बगीचे, बच्चों के खेलने के लिए सुन्दर खेल मैदान. वृद्धजनों को टहलने के लिए सुन्दर एवं व्यवस्थित पार्क जिनमें पैदल चलने वालों के लिए उत्तम पदपाथ.

इस क्षेत्र की इस उन्नति के पीछे हाथ है लोगों की चाहत और कुछ कर सकने की चाहत. यहां अधिकांशतः वे लोग आकर बसे हैं जो बाहर से भोपाल आए थे और उन्हें निवास की कठिनाई से दो-चार हाथ करने पड़ रहे थे. सरकारी निवास तो मिलना कठिन ही नहीं नामुमकिन था. एक तिहाई वेतन तो दो कमरे के मकान के किराये में चला जाता था. लोग उन दिनों भोपाल में हुआ स्थानान्तरण सजा मानते थे किन्तु ये तो सोच-सोच का फर्क है जिसे एक सजा मानता है उसे ही दूसरा विकासात्मक अवसर.

आधुनिकता की बयार इस नगर से भी अछूती नहीं रही. यहां पर भी फैशन ने अपने पांव पसार लिए हैं. देशी और विदेशी संस्कृति का मिलाजुला संगम यहां पर भरपूर देखने को मिलता है. यह पुराना नवाबी शहर है. यहां की गंगा-जमुनी संस्कृति में भाईचारा एक मिशाल है. ईद-दिवाली साथ-साथ मिलकर मनाना तथा हिन्दू बहनों द्वारा मुसलमान भाइयों की कलाइयों पर रक्षासूत्र बांधना और उसका निर्वाह करना यहां की गरिमामय पहचान है. भोपाल के रीति-रिवाज सारे हिन्दुस्तान में मिशाल के तौर पर याद किए जाते हैं. सिर्फ इतना ही नहीं साहित्य और संस्कृति के साथ-साथ राजनीति के दंगल में भी भोपाल का अब्बल नाम रहा है जो आज भी कायम है.

भोपाल की प्रशंसा करने बैठ जाएं तो आपकी उम्र का पता ही न चल पाए कि कब जवानीं से बुढ़ापे में पहुंच गए. भोपाल की अनेक पहचानों के बीच कई नई पहचाने लेकर उभरा है कोलार रोड़ का उपनगर. इस इलाके में लगभग सौ से अधिक नई-नई रहवासी कालोनियां बस गईं हैं. इन कालोनियों में अधिकांश रहवासी शासकीय मुलाज़िम हैं जो बाहर से आए हुए हैं और निवास की समस्या से पीड़ित. यह क्षेत्र नगर निगम भोपाल की सीमा से बाहर कई पचायतों में बंटा हुआ होने के कारण जमीन के क्रय-विक्रय एवं मकान बनाने में लगने वाली मंजूरियों की दिक्कतें यहां कम थीं. सरपंच से मिलकर सभी मंजूरियां एक दिन में ही मिल जाती थीं.

अधिकांश जमींदार जिनकी जमींने इन कालोनियों के लिए विक्रय हुईं या तो स्वयं सरपंच थे या सरपंचों के नाते-रिश्तेदार इसलिए तत्कालिक परेशानियां आने का प्रश्न ही नहीं उठता था. जिनकी जमींने बंजर थी, जिनमें कृषि कार्य सम्भव ही नहीं था उनके भी अच्छे दाम मिलने लगे तो वे स्वयं सरपंचों से मिल मिलाकर मंजूरियां दिला दिया करते थे. धीरे-धीरे यह क्षेत्र चर्चा का विषय बन गया. राजनैतिक निगाहों ने भी इस ओर गौर फरमाया और घूमने लगीं उनकी लालबत्ती वाली गाड़ियां और बढ़ने लगा इस क्षेत्र का महत्व. परिणामतः अब यह क्षेत्र राजनीति का अखाड़ा बनने लगा. सरपंचों के पदों का महत्व बढ़ा, फिर इसे नगर निगम में मिलाने की आवाज़ें गूंजी. राजनीति के चतुर खिलाड़ियों ने दावपेंच चलाए और इसे प्रथक नगरपालिका क्षेत्र का दर्जा मिल गया. राजनैतिक ऊंट सदैव अपनी मर्जी के करवट बैठते हैं फिर ऊंट भी अपने हों तो कहना ही क्या?

'चलती का नाम गाड़ी' कहावत कभी झुठलाई नहीं जा सकी और न चांदी के जूते की मारक क्षमता घटी, वह सब करा सकता है और करा भी रहा है, जिसे कोई अन्य योग्यता की आवश्यकता नहीं. तो सच मानिये कोलार क्षेत्र में भी खूब चला चांदी वाला जूता और अभी भी प्रचलन में है. समय की गति के साथ-साथ पयादों की पहचान होनी लगी. आरक्षण का ठप्पा मेरा आशय

जातिगत आरक्षण से कतई नहीं बल्कि वार्डों के आरक्षण की बात कर रहा हूं, यद्यपि हुआ लाटरी पद्धति से किन्तु चांदी वाले की इसमें भी खूब चली.

चुनाव के समय टिकटों का बंटवारा कैसे और कितनी कठिनाई वाला कार्य होता है वही जान सकते हैं जिन्होंने इस दंगल में ताल ठोंकने की हिम्मत जुटाई हो. लोगों के द्वारा किस्मत की दुहाई जरूर दी जाती है किन्तु नज़र कभी नहीं आती दिखी, हां हिकमत और कभी-कभी समर्पण का कमाल देखने को मिला. जुगाड़ भी एकाध प्रतिशत काम आई किन्तु वह भी टिकिट पाने तक, वोट के काम वह भी नहीं क्योंकि जब मतों की गिनती हुई तो मात्र ७ मत ही मिले. जिनमें ४ परिजनों के होने चाहिए थे, परन्तु उसकी जीभ आज भी कतरनी की तरह चलती है, लोग केवल इतना कह कर चल देते हैं हद हो गई बेशर्मी की.

कुछ पदों पर नारी आरक्षण लागू था. गुंजाइसों को तराशने का काम जोर शोर पर चला. अपनी-अपनी पहचान परवान चढ़ी. कुछ की पुरानी काम आई और कुछ में नए समीकरण बने परन्तु चमड़ी और दमड़ी दोनों का कमाल. कोई किसी से कम नहीं पड़ रहा था. दमड़ी की चमक सड़कों पर धूम मचा रही थी और चमड़ी का तो रुतवा ही अलग था.

वे कहावतें पता नहीं कहां गुम हो गईं 'अगर धन गया तो कुछ नहीं गया', 'स्वास्थ्य गया तो कुछ गया.' परन्तु-' चरित्र गया तो सब कुछ गया.' धन से भी ज्यादा चरित्र का सिक्का चला किन्तु वह भी चर्चाओं तक सीमित रह गया वोट नहीं खींच पाया लेकिन हां दिखा दिया कमाल का जलवा और वह भी खुल्लम-खुल्ला. अपने-पराए, मित्र-शत्रु और पार्टी की निष्ठाएं सभी दांव पर लगे किन्तु कोई भरोसे पर ख़रा नहीं उतरा.

अब चला दुश्मनियों का दौर, पुलिसिया चांदी. हींग लगी न फिटकरी, खूब माल चला. मर्दों से ज्यादा मेडम का जलवा. रोज नई-नई रिर्पोटा-रपाटीं और शाम तक समझौते. आधुनिक विकासवाद की झलक स्पष्ट देखी गई. जो कल तक किसी और के थे आज किसी और के हुए नज़र आ रहे हैं. भोपाल से लेकर दिल्ली तक चर्चाओं में एक ही नाम. समाचार पत्रों के कई कॉलम उनके ही. फलतः कोलार रोड सुर्खियों में आ गया. अब तो कहीं भोपाल का नाम लिया जाता तो कोलार रोड की चर्चा पहले और वह भी अमुक के नाम से. काफी झंड़े-बैनर, नारे-प्रचार. आशिक-समर्थक उपयोगी अनुपयोगी.

समय का पहिया अपनी धुरी पर अवाध गति से घूमता रहता है और कब कौन का कैसा रूप उजागर कर दे कह पाना कठिन. कोलार रोड उससे कोई अलग पहचान तो गढ़ेगा नहीं. क्षणिक बनी चमक धूमिल पड़नी क्या शुरू हुई. चमड़ी का मोल उसकी चमक का साथ ही देता है चमक फीकी पड़ी तो फिर पूंछ भी नहीं उठती. उनका भी वही हस्र हुआ. आने-जाने, मिलने -मिलाने वालों ने किनारे किए. जो चमकदार दिखता वही बिकता है। समाचार पत्रों की रिश्तेदारी किसी से नहीं और न स्थाई दोस्ती न दुश्मनी. वे तो लाल मुंह वाले बंदरों की तरह हैं जिसके हाथ में चने वे उसके पीछे, हाथ खाली तो दूर, बहुत दूर. समाचार पत्रों की सुर्खियों से नाम गायब हो गया. पुलिसियों के बारे में तो कहावतों का ढेर है कि वे तो बाप के मीत नहीं होते हैं. मरने के बाद जिस तरह परजीवी शरीर को छोड़कर भाग जाते हैं ठीक वैसे ही ये होते हैं. अब तो वे उनके फोन को सुनना और आज्ञाकारिता तो दूर पहचानते भी नहीं. मजबूरन थाने जाना और फिर अनसुनी के दौर. चर्चित कहावत है-'वक़्त रे तेरी बलिहारी' वक़्त ने अच्छों-अच्छों को सबक सिखा दिया तो ये किस खेत की मूली हैं. वक़्त उसी का साथ देता है जो वक़्त का. ऊपर की ओर मुंह उठाकर चलने वालों के पैरों में तो ठोकरें लगनी ही हैं और टूटने हैं नाखून, आसमान की ओर मुंह करके थूकने वाले पर ही गिरता है उनका थूक.

स्थाई पहचान के बुनयादी उसूल होते हैं. शाश्वत सत्य है-जो जन का उसका जन. जो धन का उसका कभी सगा न धन और जो मन का उसका न मन, न धन न तन. सब साथ छोड़कर चल देते हैं. अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत. टांय-टांय फिस्स हुए रुतवे, न जान न पहचान. वक़्त जिसे रंक से राजा बना सकता है उसे राजा से रंक भी. जिनका चरित्र इस अधोपतन के समय पर सुरक्षित बना रहा उनकी पहचान भी बची रही और जिन्होंने जिस्म की नुमाइश लगाई, दिल खोलकर यारी निभाई उनके हाथ वही रहा जो उन्होंने बोया. उनकी पहचान भी उसी तरह की बनकर रह गई. बनावटी शान शौकत किसकी कब तक साथ देती है कुछ तय नहीं है किन्तु चमड़ी की चमक का तो समय तय है. जैसे ही चमड़ी ढीली पड़ी शौकीनों ने किनारे काटने शुरू किए. कोलार रोड की चर्चित नेत्री के लिए कोई अलग से सिद्धान्त प्रकृति तो गढ़ने वाली नहीं थी. इनका भी वही हस्र हुआ जो उसके

पहले और अनेक के साथ हो चुका था किन्तु हम कोलारवासी उनके ऐहसानमंद जरूर हैं क्योंकि वे भले ही अपनी पहचान खो चुकी हों किन्तु उन्होंने कोलार रोड को जो पहचान दी वह स्थाई बनकर रह गई है.

एक दिन माननीया मेडम जी सब्जी मार्केट में थैला लटकाए प्याज बिक्रेता से उलझते दिखीं, मैं उनसे तीन दुकान दूर टमाटर छांट रहा था. प्याज वाला कुछ सुन नहीं रहा था और वे बके जा रहीं थीं-

'कितने ऐहशान फरामोस होते हैं लोग, कितने जल्दी भूल जाते हैं. अरे ओ वे! ऊपर निगाह उठाकर देख मैं कौन हूं?'

प्याज वाला बगैर उसकी ओर देखे अपने काम में मस्त था. वह उसकी आवाज़ से पहचान चुका था और समझ भी रहा था कि यह रस्सी जल जरूर गई है किन्तु इसमें अकड़ अभी भी बाकी है. समझदार आदमी वही माना जाता है जो किसी के मुंह न लगे. रहीम जी ने कहा भी है-'रहमन बुरा न मानिए, जो गंवार कह जाय.'

दुकानदार के सामने सुबह से शाम तक न जाने कितने आते हैं और दिखाते हैं तरह-तरह के नाज़-नख़रे और भुन्नाकर चले जाते हैं. वह किस-किस से मगज खपाए. प्यारे ने भी उसकी ओर न प्यार झलकाया न नाराजी.

'अरे ओ रे पिरवा! बोल न कितने में दी?'

'आपको तो खुद मालूम है. कोई अलग रेट थोड़े ही हैं किसी को. जो सबको वही आपको.'

'जरा गर्दन को तकलीफ़ दे ले. आम और ख़ास का फ़र्क़ समझ जायेगा.'

'प्याज में क्या आम और क्या ख़ास, ये राजनीति का अखाड़ा नहीं है मेम साहब! लेना है तो बढ़ाओ ४०/- अन्यथा आगे बढ़लो मुझे काम करने दो ग्राहकी का समय है मगज न खाओ.'

'कितना बत्तमीज हो गया है रे! आने दे किट्टू को.'

मैं सोच रहा था वक़्त जैसी पटकनी तो दुश्मन भी नहीं दे सकता. मनुष्य को वह झूले की पलकियों की तरह किस तरह झुला देता है और व्यक्ति पैसे देकर कैसे धक्के खाता है. वही सब्जी वाला, वही मेम साहब, कोई बदलाव नहीं, न तराजू में तबदील और न प्याज में. तबदीली कहीं देखने को मिली है तो वह है वक़्त में जिसने कहां से उठाया और कहां पर पटक दिया. पहचान बनने और बिगड़ने में बहुत ज्यादा अर्सा नहीं लगा. सबके सब वहीं के वहीं हैं किन्तु बदले हैं तो वे जिन्होंने समय को पहचाने बगैर अपनी चालें चलीं और अपने पांसों पर निगाह नहीं रखी. अब समय उनपर से निगाह हटा रहा है तो कराह निकल रही है.

अब कुछ बात उन महानुभाव किट्टू राजा के बारे में भी कर ली जाय जिसकी धौंस उनकी माता जी, कल की चर्चित नेत्री प्याज वाले को दे रहीं थीं. आप हैं ठाकुर किशन सिंह जी. एक चर्चित नेत्री के सुपुत्र जिनकी माता जी के चलते वक़्त में खूब धुकती थी. कोलार रोड वासी उन्हें प्यार से किस्सू राजा कहा करते थे. बड़े जलवे थे उनके, सभी उनकी जीहुजूरी में लगे रहत थे. जनता मुंह पर भले ही किसी से भला-बुरा न कहे किन्तु सच्चाई से दूर नहीं रहते. मेडम के दुष्कर्मों का बदला उनके इकलौते पुत्र जी से लेने का क्या नायाब तरीका निकाला. समाज की जितनी भी बुराइयां हो सकती हैं एक-एक करके सब सिखाना शुरू कर दीं गई. अब किस्सू राजा सर्वगुण सम्पन्न होने लगे. पहले पहल सिगरेट फिर बियर और बाद में सुरा और सुन्दरी में पारंगत कर दिए गये. अब उनका नाम भी किस्सू राजा से किट्टू राजा की ओर बड़ा और रह गए किट्टू बन कर. दिन-रात शराब के नशे में धुत रहते हैं. पी-पाकर किसी से उलझ जाना आए दिन की दिनचर्या बन गई है. सुबह से शाम तक का एक ही क्रम बन गया. प्रतिदिन थाने और अदालत के मेहमान बनने लगे, किन्तु हां माता जी के पल्लू में बंधे ये नाम धारी किट्टू राजा जिसको ठीक करने का आदेश माता रानी दे देतीं उसके हाथ-पांव ठीक समझो.

सत्ता सुन्दरी के ऊंट की करवट बदलते ही इन राजकुमार किट्टू राजा के भी दिन फिर गए. जिस किसी से उलझे उसी ने दो चिपका दिए और कर दी थाने में शिकायत. शाम आते-आते थाने में बंद. पहले तो माता जी के फोन पर छूट आते थे आजकल तो बगैर अदालत से जमानत मिले छूटना संभव ही नहीं होता है किन्तु नंगे से भगवान डरता है कि कहावत उनपर सही बैठती है. माता रानी के आदेश का पालन कर ही देते हैं भले ही छः आठ दिन बाद ही बाहर क्यों न आ पायें. वैसे ये राजकुमार आजकल पीटते कम और पिटते अधिक हैं और उससे भी अधिक मजेदार बात ये है कि अब पिटते भी वे ही हैं और बंद भी होते हैं वे ही. परन्तु माता जी उनके नाम धमकियों की बरसात करने से बाज नहीं आतीं हैं, भले ही लोग उनकी इस गीधड़ भभकी का कितना ही उपहास क्यों न उड़ाते रहें.

ऐसी और भी एक दो रानी साहिबा इन्हीं के साथ नामचीन बनी कोलार

रोड पर हैं किन्तु वे अब शारीरिक व्यापार की ओर अधिक मुड़ चुकी हैं क्योंकि अपने रंगीन दिनों में नेत्री महोदया ने उनका इन्हीं कामों में ज्यादा इस्तेमाल किया था अपनी राजनीति चमकाने में. एक बार भले ही जाम मजबूरी में पिया हो किन्तु बाद में वह आदत में ढल जाता है, इनके साथ भी वैसा ही हुआ था किन्तु वे आज भी सत्ताधारियों की चहेती बनी हैं और ख़ास अवसरों पर उन्हें याद कर लिया ताजा है और हो लेतीं हैं उपकृत. नाम तो चल ही रहा है भले ही कैसा भी. सत्ता के गलियारों में मंत्री और अधिकारियों के एक चहेते कर्मचारी ने जो कभी अमुक पार्टी के वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष का तत्कालीन निज सचिव होता था इन रानी साहिबाओं की तारीफ में नाम न लेने की शर्त पर कहा था कि इन्हें पार्टी में पद पर रखा ही इसलिए जाता है कि जब पार्टी के बड़े नेता प्रदेश भ्रमण पर आते हैं तो उनके स्वागत -सत्कार की जिम्मेदारी इनको ही सौंपी जाती है. अगर ये न रहें तो फिर यह जिम्मा कौन संभालेगा. उच्च्व पदाधिकारियों की किरकिरी हो जायेगी. ऐसे अवसरों को साधने-संभावरनें में कुशलता भी तो इन्हीं चन्द्र चंद्रमुखियों के पास है जिन्हें संरक्षण एवं संवरण देना पार्टी के उच्च्व पदाधिकारियों को आवश्यक हो जाता है. यही कारण है कि सरकार किसी की भी हो, पद-पदाधिकारी कोई भी हो इन रानियों के जलवे बरकरार रहते हैं.

‘अब कहिए ये कितनी महत्वपूर्ण हैं कोलार रोड उपनगर के नाम को रौशन करने में?’’

इतना आसान तो है नहीं इस प्रश्न का नकारात्मक उत्तर दे पाना. वे मुस्कुरा दिए मौन स्वीकृति में. कुछ देर शान्ति पसरी रही जैसे किसी ने रेशम के धागों से हौंठ सिल दिए हों. इस मौन को भंग भी कौन करे. इस समस्या से बचने के लिए मैंने अख़बार का सहारा लिया.

‘अरे आनंद बाबू ऐसी कौन सी महत्वपूर्ण ख़बर छप गई समाचार पत्र में जो हमको बैठा भूल उसी में गुम गए हो?’

‘कुछ भी नहीं बस ऐसे ही.’

‘फिर भी कुछ तो होगा ही.’

‘आने वाले नगर पालिका चुनाव के लिए वार्डों के आरक्षण की ख़बर है. अबकी बार नगर पालिका अध्यक्ष के पद पर सामान्य वर्ग के पुरुष का आरक्षण हुआ है.’

‘अच्छा ही हुआ.’

‘वह कैसे?’

‘कोलार रोड की चर्चित नेत्री की इज्जत बच गई.’

‘मैं समझा नहीं?’ नजरें मटकाकर उन्होंने मुस्कराकर कहा.

‘पिछले चुनाव में किस्मत आजमाई थी. एक को तीन, दूसरी को सात और तीसरी को नौ मत मिले थे.’

‘और उनको?’ वे इशारे से बोले, थोड़े से दांत भी चमके.

‘किसकी बात कर रहे हैं आप?’

‘वह फितरती, जो सभी की शिकायतें करता रहता है और हर दिन समाचार पत्रों कुछ न कुछ समस्या उठाकर अपना फोटो छपवाता रहता है.’

उसकी तो पूछो ही नहीं उसकी तो लुटिया डूब गई, निपट गईं वे जिनके नाम पर नेतागिरी चमकाता फिरता था. उसी की पत्नी को तो मिले थे तीन मत. बड़ी बनठन कर निकलती थी जैसे कोलार रोड नगर पालिका की प्रथम नागरिक बन ही गई हो चुनावों नतीजे आने के पहले ही.’

‘बनठन में तो आज भी कमी नहीं है. जलवे तो अब भी बरकरार हैं.’

‘बेशरम हैं पिछले चुनाव की उधारी चुकी नहीं है. जो भी मांगने आता है दस पंद्रह चक्कर कटाने के बाद चैक काट दिए जाते हैं जो बाउंस हो जाते हैं. कई लोगों ने न्यायालय में दावे भी कर दिए हैं.’’

‘लेकिन उनकी शान में तो कोई अन्तर नहीं दिख रहा है.’

‘उससे क्या होने वाला. तुमने वह कहावत नहीं सुनी क्या?’

‘कौन सी?’

‘वही है कि बेशरम...रूख जमो उसका छाया मिली.’

दोनों ठहाका मार कर हंस दिए. चलो जलवा तो खिंच ही रहा है अन्दर की बातें कौन उकेरता है. कोलार रोड उपनगर की शान तो माने जाते हैं. नाम तो चर्चाओं है, हर कोई पहचानता है.’

‘भाड़ में जाए ऐसा नाम और पहचान. नकटी के नौ नाम...हर गली पहचान, सौ-सौ सौहर और नाम सत्यवती.’

‘नाम तो नामी का होता है. रही आप जैसों की सोच तो इसकी परवाह कौन करता है. आप तो जलते हैं उनकी **पहचान** से.’

‘अरे ये क्या कहा?’

‘गुस्सा थूक दे यार आज कल सब चलता है तू क्यों अपना खून जला रहा है. चल चाय पिलाता हूं.’ दोनों चल देते हैं.

हिन्दी हमारी अपनी मातृभाषा, राजभाषा है. हिन्दी दिवस मनाकर इसका अपमान न करें. हिन्दी अपनाये भ्रष्टाचार भगाये।

-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जारी

लघु कथाएं

बदला

‘**सी**ता और लक्ष्मण के साथ राम पंचवटी में वनवास बिता रहे थे. एक दिन सूर्पनखा घूमते-फिरते वहाँ पहुँच गयी. दोनों भाइयों को देख वह उनकी सुंदरता पर लट्टू हो गयी. तब वह अपना सुंदरतम रूप धारण कर पहले राम के समक्ष, इनकार करने पर लक्ष्मण के समक्ष भी अपनी शादी का प्रस्ताव रखी. मगर लक्ष्मण ने भी इनकार कर दिया. तत्पश्चात् वे अंग्रज के संकेत पर उसकी नाक-कान काट लिये.

अपमानित सूर्पनखा रोती-विलखती भाई खरदूषण के पास गयी और उसके पौरूष को धिक्कारने लगी. बहन की बदहाली देख उससे नहीं सहा-रहा गया. आवेश में बोला-“किसने तुम्हारी ऐसी दशा की? चल, अभी मैं इसका बदला लेता हूँ.”

सूर्पनखा के नाम-पता बता दिया. खरदूषण तत्क्षण उसे आगे लिये दल-बल के साथ पंचवटी को चल दिया. वहाँ पहुँचा तो वह सीता को देखते ही उसकी सुंदरता पर मोहित हो गया. उसकी नीयत बुरी हुई. बहन के अपमान का बदला लेने का विचार भी बदला. उसने मंत्री को आदेश दिया-“जाकर राम से कहो कि सीता को मुझे सौंप दोनों भाई सकुशल घर लौट जायँ.”

कर्त्तव्य-धर्म

‘**कि**सी शिक्षक को स्थानांतरण करा, गृह प्रखंड में योगदान किये दो-तीन माह हो चुके थे. एक दिन शाम को उन्हें एकाएक ख्याल पड़ गया कि वे वहाँ ठाकुर को एक दिन का दाढ़ी बनाई नहीं दिये हैं.

शिक्षक सोचने लगे-वहाँ जाकर चुकती करने में बहुत खर्च हो जायेंगे. एक दिन के समय की बर्बादी और परेशानी अलग. ठाकुर का पूरा पता भी मालूम नहीं जो मुद्रा देश से भेजा जा सके.

महटिया जायँ, शिक्षक इस विचार के थे भी नहीं. क्या करें, इस उधेड़ बुंन में उस रात उनकी नींद भी हराम हो गयी. अंततः एक दिन वे ठाकुर के सैलून में जा पहुँचे. ठाकुर ने प्रणाम कर कुर्सी की ओर संकेत करते हुए कहा-“बैठिये मास्टर साहब. इस बार बहुत दिनों पर पधारे हैं?”

“हाँ, हम यहाँ से अपना बदली करा लिये हैं. आपका एक दिन का बाकी रह गया था. इसीलिए आना पड़ा.”

“राम-राम, काहें को इतना कष्ट किये. आपको दो रुपये नहीं देने से मेरा कौन काम रूक जाता है?”

“आपका कहना सही है. मगर आदमी का अपना कर्त्तव्य-धर्म भी तो होता है.” कह शिक्षक महोदय ने जेब से दो टकिया निकाला और ठाकुर को थमा दिये.

-**गणेश प्रसाद महतो**, भागलपुर, बिहार

घर

‘**र**विन्दर अपने आंगन में बैठे अपने बड़े बंगले को निहार रहे थे. इतने में नौकर चाय लेकर आ गया. चाय की चुसकियाँ लेते-लेते उन्हें एकाएक अपने इकलौते बेटे का बचपन याद आ गया. आज वो अपनी जिन्दगी के ६ दशक पार कर चुके हैं. बेटी अपने घर चली गई है. पत्नी बीमारी से परेशान दम तोड़ चुकी है. अब तो इस इतने बड़े घर में अपने नौकर के साथ अकेले हैं. न तो इसे छोड़ते बनता है न बेचते न रहते. उन्हें अच्छी तरह याद है कि उनकी पत्नी ने उनसे कई बार कहा था बच्चों की पढ़ाई का समय है इन पर ध्यान दो, परन्तु उन्होंने उसकी न सुनी थी. बच्चों को सामने वाले स्कूल में भेज दिया था. बेटा हिसाब में कमजोर था, कई बार टयूशन के लिये कहता, परन्तु उन दिनों वो अपना घर बनवा रहे थे. सारे खर्चो में कटौती की थी. उन्होंने अपने बेटे को सब कुछ होते हुए भी ट्यूशन का प्रबंध नहीं करके दिया था. जैसे-तैसे बेटा बड़ा हुआ व दूर चला गया. उसे इस गाँव से नफरत हो गई. उसके मन में ये बैठ गई कि वो कुछ बन सकता था परन्तु पिताजी ने उसे मौका नहीं दिया. उसने अपनी छोटी सी गृहस्थी बसा ली थी. पत्नी की बीमारी का ईलाज कराने के लिए भी वक्त न था, उन दिनों बाज़ार वाली दुकानें, मकान बन रहा था, वो भी चल बसी. आज वो महज़ अकेले रह गये है, अब क्या करें इस घर का, सोच माथे पर हाथ मारते हैं.

-**शबनम शर्मा**, सिरमौर, हि.प्र.

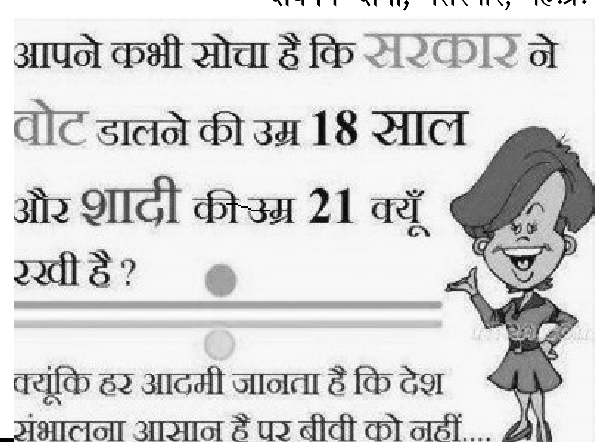

समीक्षा

काम-क्रोध-मद-लोभ लुटेरे, बैंठे हैं सब तुझको घेरे!

पाश्चात्य संस्कृति के गढ़ अमेरिका में रहकर भी अपनी संस्कृति, सभ्यता, भगवत भजन को आत्मसात करने वाली मुंबई की मूल निवासी न्यूजर्सी, यू.एस.ए. में शिक्षिका देवी नागरानी जी का एक भजन संग्रह 'भजन-महिमा' प्रकाशित हुआ है. दिवंगत माता-पिता की पावन स्मृति को समर्पित प्रस्तुत संग्रह के भजन बहुत ही सरल और भावभीने हैं तथा प्रभु-समर्पण की एक सीधी-सच्ची भावना को समाहित किये हुए हैं. सर्व धर्म समभाव की भावना को उत्प्रेरित करती देवी जी की ये पंक्तियां देखिए-

है राम रहीम तूही, तू गीता और कुरान।
गुरुग्रन्थ तूही मालिक, तू बाइबिल और पुराण।
तुझको न कभी भूलूं, मन ऐसा तो कर दें!
हे नाथ कृपा करके, मुझको ऐसा वर दे!

भजन लिखने के लिए परमेश्वर में डूबना बहुत जरुरी है. देवीजी के भजनों को पढ़ने से लगता है कि वे भगवत भजन में पूरी तरह डूबी हुई है.

दुख-दर्द भरी इस दुनिया में,
तुझ बिन है कौन यहां अपना।
कहने को तो जग अपना है,
लेकिन सब है झूठा सपना।
अनगिन तेरे उपकारों को
कैसे हे नाथ भुलाऊँ मैं...!

साई जी कृपा व नाम लेने को प्रेरित करती हुई कहती है-

साई गंगा, साईं यमुना
साई तो है सारी रचना।
साई सुमरन-जल से बन्दे
निज अन्तर को धोलो!
साई नाम बोलो, साई नाम बोलो...!

कृष्ण कन्हैया के प्रेम रस में पूर्णतया डूबी मीरा की तरह साई के रस में डूबी देवी जी लिखती है-

सांसो में समा जाओ, ऐसे जैसे सरगम
नैनों में बस जाओ, ऐसे जैसे अंजन।
डाली-डाली उड़कर, जाने ढूंढे किसको,
मनपंछी मतवाला, उड़ता फिरता वन-वन।
नैनों में बस जाओ, ऐसे जैसे अंजन!

साई जी के द्वार पर अपने को खड़ी कर देवी जी कहती है-

साई दे-दे दान दया का,
ठाढ़ें द्वार तिहारे!
अंधकार घिरता आता है,
रह-रहकर मन घबराता है।
तुझ बिन कौन उबारे!
ठाढ़े द्वार तिहारे...!

परमात्मा को स्वयं को आत्म समर्पण करने की पराकाष्ठा को व्यक्त करती देवी जी ये पंक्तियां देखिए-

तुझको जो भाए हे स्वामी,
वह फूल कहॉ से लाऊँ मैं।
चरणों में नाथ मगर तेरे
ऑसू के अर्घ्य चढाऊँ मैं।
तेरे चरणों में है अर्पण,
मालिक अब मेरा यह जीवन।
मैं जित देखूं तित तू ही तू,
विस्मित कुछ समझ न पाऊँ मैं।

+++++++++++++++++++++

शरण में आए हैं साई,
चरण में तू जगह देना।
सहारा है लिया तेरा,
उसे साई निभा देना।

+++++++++++++++++++++

आओ साई, आओ साई!
मन में मेरे कब आओगे।
मन-मंदिर में आकर दाता,
नयनन में कब बस जाओगे।

++++++++++++++++++++++++

तू साईं की शरण में आजा,
भवसागर तर जाएगा।
सूना जीवन तेरा प्यारे,
खुशियों से भर जाएगा।

+++++++++++++++++++++

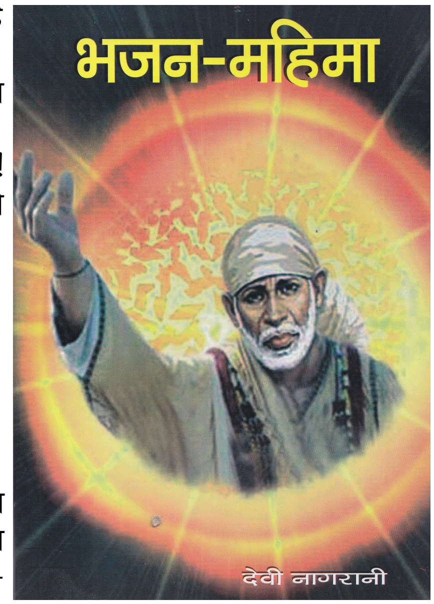

मन से साई राम।
जप मन साई राम।

मनहर भजन को देवी जी ने मोती की तरह पिरोया है. मुझे ऐसी आशा है कि लगभग सभी भजन आम जन के द्वारा भी भक्ति भावना में ओत प्रोत होने के लिए गुनगुनाएं जाएगें. शिरडी के साई बाबा को अराध्य मान कर लिखे गये अधिकांश भजन साई बाबा को ही समर्पित है. भजनों को लिखना लेखन की अन्य विधाओ की तुलना में सहज नहीं है और इनकी समीक्षा लिखना और भी कठिन है क्योंकि इसमें छन्द, लय, व्याकरण नहीं बल्कि आस्था का प्रश्न जुड़ा होता है. मेरी शिरडी के साई बाबा से यही प्रार्थना है कि उनके आशीर्वाद से देवी जी की लेखनी अपने उचित मुकाम को हासिल करें. पाठकों से अनुरोध है कि एक बार इसे अवश्य पढ़े.

पृष्ठ : 90 **मूल्यः** रु० 100/

लेखकः देवी नागरानी, 9–डी, कार्नर व्यू सोसायटी, 15/33, रोड, बांद्रा(पं), मुंबई–400050

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी